Postal Reg. No.GDP -45/2020-2022

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡدِ

وَلَقَدۡ نَصَرَکُمُ اللّٰہُ بِبَدۡرٍ وَّاَنۡتُمۡ اَذِلَّۃٌ

वर्ष- 9
अंक - 43
मूल्य
600 रुपए
वार्षिक

साप्ताहिक क़ादियान

बदर

Weekly
BADAR Qadian
HINDI

संपादक
शेख़ मुजाहिद अहमद

उप संपादक
सय्यद मुहियुद्दीन फ़रीद

20 रबी उल् सानी , 1446 हिज्री कमरी, 24 ईखा 1403 हिज्री शम्सी, 24अक्टूबर 2024 ई.

अल्लाह तआला का आदेश

وَسَخَّرَ لَکُمُ الَّیۡلَ وَالنَّہَارَ ۙ
وَالشَّمۡسَ وَالۡقَمَرَ ؕ وَالنُّجُوۡمُ مُسَخَّرٰتٌۢ
بِاَمۡرِہٖ ؕ اِنَّ فِیۡ ذٰلِکَ لَاٰیٰتٍ لِّقَوۡمٍ
یَّعۡقِلُوۡنَ ۔١٣

सूरः नहल, आयत : 13

अनुवाद : और उसने तुम्हारे लिए रात और दिन, सूरज और चाँद को तुम्हारे अधीन कर दिया, और तारे भी उसी के आदेश से अधीन हैं। निश्चित रूप से इसमें उन लोगों के लिए बहुत बड़ी निशानियाँ हैं जो समझ रखते हैं।

अख़बार-ए-अहमदिया

रूहानी ख़लीफ़ा इमाम जमाअत अहमदिया हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद साहिब ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाह तआला बिनस्रिहिल अज़ीज सकुशल हैं। अलहम्दो लिल्लाह। अल्लाह तआला हुज़ूर को सेहत तथा सलामती से रखे तथा प्रत्येक क्षण आप पर अपना फ़ज़ल नाज़िल करता रहे। आमीन

आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की वाणी

हिबा (उपहार) को वापस ख़रीदने की मनाही

{2623} हज़रत उमर बिन खत्ताब (रज़ियल्लाहु अन्हु) से रिवायत है कि मैंने अल्लाह की राह में एक घोड़ा सवारी के लिए दिया, तो जिसके पास वह घोड़ा था, उसने उसे ख़राब कर दिया। इसलिए मैंने चाहा कि उसे वापस ख़रीद लूं और मुझे लगा कि वह उसे सस्ता ही बेच देगा। मैंने इसके बारे में नबी (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) से पूछा तो आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: "उसे न खरीदो, चाहे वह तुम्हें एक दिरहम पर ही क्यों न दे, क्योंकि अपने सदक़ा (दान) में लौटने वाला उस कुत्ते की तरह है जो अपनी उल्टी को चाटता है।"

गवाही पर निर्णय

{2624} हज़रत अब्दुल्लाह बिन उबैदुल्लाह बिन अबी मुलैका से रिवायत है कि इब्न जद'आन के आज़ाद किए हुए गुलाम सुहैब के बेटों ने सोने के दो कमरे और एक कोठरी का दावा किया, इस आधार पर कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने यह सुहैब को दिए थे। तो मर्वान ने कहा: "इस बात की गवाही कौन देगा?" उन्होंने कहा : (हज़रत अब्दुल्लाह) बिन उमर (रज़ियल्लाहु अन्हु)। मर्वान ने उन्हें बुलाया और उन्होंने गवाही दी कि अल्लाह के रसूल (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) ने सचमुच सुहैब को दो सोने के कमरे और एक कोठरी दी थी। अतः मर्वान ने हज़रत अब्दुल्लाह (रज़ियल्लाहु अन्हु) की गवाही के आधार पर उनके हक़ में फैसला कर दिया।

(सहीह अल्-बुख़ारी, भाग 4, किताबुल् हिबा)

★ ★ ★

बड़ी हैरानी की बात है कि नमाज़ के समय को समय की बर्बादी समझा जाता है, जबकि इसमें इतनी भलाइयाँ और फायदे हैं। और अगर पूरा दिन और पूरी रात बेकार और फालतू बातों या खेल और तमाशों में बर्बाद कर दें, तो इसे "मसरूफ़ियत" (व्यस्तता) कहा जाता है।

हज़रत अकदस मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम का उपदेश

नमाज़ पढ़ना और वुज़ू करना सेहत के लिए भी फायदेमंद है। डॉक्टर्स कहते हैं कि अगर कोई रोज़ अपना चेहरा न धोए तो आँखों की बीमारी हो जाती है और यह मोतियाबिंद की शुरुआत होती है। कई बीमारियाँ इससे पैदा होती हैं। फिर बताओ कि वुज़ू करने से मौत क्यों आती है? ज़ाहिर है, यह एक बहुत अच्छी बात है। वुज़ू में मुँह में पानी डालकर कुल्ला करना होता है, जिससे मुँह की बदबू दूर होती है। मिस्वाक करने से दाँत मजबूत होते हैं और दाँतों की मज़बूती से खाना अच्छी तरह चबाया जाता है, जिससे वह जल्दी हज़म हो जाता है। फिर नाक साफ़ की जाती है। अगर नाक में कोई बदबू आ जाए, तो वह दिमाग़ को गंदा कर देती है। अब बताओ, इसमें क्या बुराई है?

इसके बाद इंसान अपनी ज़रूरतें अल्लाह के सामने रखता है और उसे अपनी बातें पेश करने का मौका मिलता है। दुआ करने का समय होता है। नमाज़ में ज़्यादा से ज़्यादा एक घंटा लगता है, जबकि कुछ नमाज़ें तो पंद्रह मिनट से भी कम समय में अदा हो जाती हैं। फिर भी हैरानी की बात है कि नमाज़ के समय को समय की बर्बादी समझा जाता है, जिसमें इतनी भलाइयाँ और फायदे हैं। और अगर पूरा दिन और पूरी रात बेकार और फालतू बातों या खेल-तमाशों में बर्बाद कर दें, तो इसे "मसरूफ़ियत" (व्यस्तता) कहा जाता है।

अगर मज़बूत ईमान होता, या ईमान ही होता, तो यह हालत क्यों होती और यहाँ तक बात क्यों पहुँचती? इसके बावजूद, जब ईमान की हालत इतनी गिर चुकी है, फिर भी अगर कोई इस कमज़ोरी का एहसास दिलाकर उसका इलाज करना चाहे और वह रास्ता बताए, जिस पर चल कर इंसान अल्लाह से

शेष पृष्ठ 10 पर

जब अल्लाह तआला की तरफ से दुनिया में कोई सिलसिला क़ायम किया जाता है, तो उस समय वे बुरी आत्माएँ जो शैतान से ताल्लुक़ रखती हैं, जोश में आ जाती हैं और पूरी ताक़त इस बात पर लगा देती हैं कि किसी तरह सच्चाई दुनिया में न फैल सके। लेकिन अल्लाह तआला अपने निशानों के साथ नबियों की ताइद (समर्थन) करता है और शैतान को उसके समस्त मंसूबों में नाकाम कर देता है।

हज़रत मसीह मौऊद (रज़ियल्लाहु अन्हु) सूरः अल-हज की आयत 53 और उसके बाद की आयतों की तफ़सीर (व्याख्या) में फ़रमाते हैं: आज तक कोई भी नबी या रसूल ऐसा नहीं आया जिसके हर उद्देश्य और हर मंसूबे के आगे शैतान ने रुकावटें न डाली हों। क्योंकि शैतान जानता है कि अगर नबी कामयाब हो गया, तो फिर उसका कोई ठिकाना नहीं बचेगा। जिस तरह मरता हुआ इंसान आखिरी कोशिश करता है कि किसी तरह मौत के पंजे से बच जाए, उसी तरह शैतान और उसकी नस्लें नबियों और उनके अनुयायियों के खिलाफ़ पूरी ताक़त लगा देती हैं।

जिन्होंने मरते हुए इंसान को देखा है, वे जानते हैं कि जब इंसान बेहोशी की हालत में होता है और उसे दुनियादारी की कोई खबर नहीं होती, तब भी वह मरने से कुछ पल पहले पूरी ताक़त लगाता है। इसी तरह शैतान नबियों के खिलाफ अपनी पूरी ताक़त लगा देता है। जब अल्लाह तआला की तरफ से दुनिया में कोई सिलसिला क़ायम किया जाता है, तो शैतान और उसकी ताक़तें पूरी कोशिश करती हैं कि सच्चाई न फैले।

इन अल्लाह के सिलसिलों के खिलाफ खड़े होने वाले लोग कई तरह के होते हैं। कुछ लोग सिलसिलों में नाम के लिहाज़ से शामिल होते हैं, जैसे अब्दुल्लाह बिन उबई इब्न सलूल और उसके साथी। कुछ लोग नाम से तो जुड़े होते हैं लेकिन नज़्म (व्यवस्था) से नहीं, जैसे हज़रत अली (रज़ियल्लाहु अन्हु) के ज़माने में ख़वारिज़। और कुछ लोग नाम और नज़्म, दोनों से ताल्लुक नहीं रखते, जैसे मक्का के काफिर, यहूदी और ईसाई।

ये सभी लोग मिलकर उन मक़सदों में रुकावट बनना चाहते हैं जिन्हें पूरा करने के लिए अल्लाह के नबी दुनिया में भेजे जाते हैं। लेकिन अल्लाह अपने निशानों के साथ नबियों की मदद करता है और शैतान को उसके समस्त मंसूबों में नाकाम कर देता है। असल बात यह है कि जिस तरह एक शिकारी

शेष पृष्ठ पर

जमील अहमद नासिर प्रिंटर एवं पब्लिशर ने फ़ज़्ल-ए-उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान में छपवा कर दफ़्तर अख़बार बदर से प्रकाशित किया। प्रौपराइटर - निगरान बदर बोर्ड क़ादियान

ख़ुत्बः जुमअः

नबी अक़रम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया:

اَبْشِرُوْا یَامَعْشَرَ الْمُؤْمِنِیْنَ بِنَصْرِ اللّٰہِ تَعَالٰی وَ عَوْنِہٖ

"हे मोमिनों की जमाअत! अल्लाह तआला की मदद और नुसरत से ख़ुश हो जाओ..."

मुझे यक़ीन है कि एक वक़्त आएगा जब मैं ख़ाना-ए-काबा का तवाफ़ कर रहा हूँगा और इसकी चाबियाँ मेरे हाथ में होंगी। और किसरा और क़ैसर ज़रूर हलाक हो जाएँगे और उनके माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएँगे।

कभी-कभी हमारे नौजवान भी दूसरों की बातें सुनकर प्रश्न करते हैं कि बनी क़ुरैज़ा पर उस वक़्त यह ज़ुल्म क्यों किया गया?

उन्होंने अहद (समझौता) तोड़ा था, इसलिए उन्हें इसकी सज़ा दी गई थी। कोई ज़ुल्म नहीं था जो रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की तरफ से उन पर किया गया हो।

ग़ज़वा-ए-अहज़ाब के दौरान खाने में बरकत के वाक़यात, ख़ंदक की खुदाई के दौरान मुनाफ़िक़ों और मोमिनों की हालत, रसूल-ए-पाक सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जंग की तैयारी, मुसलमानों की संख्या, मुशरिकों का मदीना पहुँचना और उसके बाद के हालात, और बनी क़ुरैज़ा की ग़द्दारी का वर्णन।

आज से ख़ुद्दामुल अहमदिया का इज्तिमा भी शुरू हो रहा है... इन दिनों में ख़ुद्दाम को रूहानी और इल्मी मयार (स्तर) को बढ़ाने की कोशिश करनी चाहिए। जिन दुआओं और दरूद की तरफ मैंने तवज्जो दिलाई थी और इसकी तरग़ीब दी थी, इन दिनों में इस तरफ ख़ास ध्यान रखें और हमेशा दोहराते रहें। अल्लाह तआला हर तरह के शैतानी हमलों से हर एक को महफ़ूज़ रखे।

श्रीमान हबीबुर्रहमान ज़ीर्वी साहिब रब्वा, डॉक्टर सैयद रियाज़-उल-हसन साहिब, श्रीमान प्रोफ़ेसर अब्दुल जलील सादिक़ साहिब रब्वा, और श्रीमान मास्टर मुनीर अहमद साहिब झंग का ज़िक्र-ए-ख़ैर और नमाज़-ए-जनाज़ा ग़ायब।

ख़ुत्बः जुमअः सय्यदना अमीरुल मो'मिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह पंचम अय्यदहुल्लाहो तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, दिनांक 20 सितंबर 2024 ई. स्थान - मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद सिर्रे (यू.के)

أَشْهَدُ أَنْ لَّا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَ رَسُوْلُهٗ۔ أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ۔ بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ۔ اَلرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ۔ مٰلِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ۔ اِيَّاكَ نَعْبُدُ وَ اِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ۔ اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ۔ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ۔ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ

जंग-ए-अहज़ाब में हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जीवनी का वर्णन हो रहा था। पिछले ख़ुत्बे में खाने में बरकत का मोजज़ा (चमत्कार) वर्णन किया गया था। इसी तरह खजूरों में बरकत का भी वाक़्या मिलता है।

लिखा है कि थोड़ी सी खजूरें, जो समस्त ख़ंदक खोदने वालों ने खाईं, उसकी तफ़सील इस तरह वर्णन की गई है कि ग़ज़वा-ए-ख़ंदक के अवसर पर एक रिवायत है। हज़रत बशीर बिन सअद की बेटी वर्णन करती हैं कि मेरी माँ अम्राह बिन्त रवाहा ने मेरे कपड़ों में थोड़ी सी खजूरें देकर कहा, "बेटी! ये अपने अब्बा और मामूं को दे आओ और कहना कि यह तुम्हारा सुबह का खाना है।" वह कहती हैं, "मैं उन खजूरों को लेकर चली और अपने पिता और मामूं को ढूंढती हुई रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के पास से गुज़री। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'हे लड़की! तेरे पास क्या चीज़ है?' मैंने अर्ज़ किया: 'हे रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम! ये खजूरें हैं। मेरी माँ ने मेरे पिता बशीर बिन सअद और मेरे मामूं अब्दुल्लाह बिन रवाहा के लिए भेजी हैं।' रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने फ़रमाया: 'ये लाओ, मुझे दे दो।' मैंने वे खजूरें आपके हाथों में रख दीं। फिर आपने उन्हें एक कपड़े पर डाल दिया और एक और कपड़े से ढक दिया और एक शख़्स से कहा, 'लोगों को खाने के लिए बुला लो।' समस्त ख़ंदक खोदने वाले जमा हो गए और उन खजूरों को खाने लगे। वो खजूरें बढ़ती गईं, यहाँ तक कि जब सब खा चुके, तो खजूरें कपड़े के किनारे से नीचे गिर रही थीं।"

(सीरत इब्न हशाम, पृष्ठ 623-624, दारुल कुतुब इल्मिया, बेरुत)

खाने में बरकत के और भी वाक़यात हैं। उबैदुल्लाह बिन अबी बर्दा रिवायत करते हैं कि उम्म-ए-आमिर अशहलिया ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में एक बर्तन भेजा, जिसमें हाइस था। हाइस ऐसा खाना है जो खजूर, घी और पनीर से बनाया जाता है। आप सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अपने ख़ैमे में हज़रत उम्मे सलमा के पास थे। हज़रत उम्मे सलमा ने अपनी ज़रूरत के मुताबिक़ उससे खाया। फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम उस बर्तन को लेकर बाहर तशरीफ ले गए और आपके मुनादी (पुकारने वाले) ने खाने के लिए बुलाया। अहले ख़ंदक (खंदक खोदने वाले) ने उस खाना को खाया, यहाँ तक कि सब पेट भर गए और वो खाना वैसे ही था जैसे पहले कुछ भी कम न हुआ हो।

(सुबुलुल् हुदा वल् -रिशाद, भाग 4, पृष्ठ 370, दारुल कुतुब अल-इल्मिया, बेरुत)

हज़रत मसीह मौऊद (अलैहिस्सलाम) सालिक के मुक़ाम का वर्णन करते हुए फ़रमाते हैं कि जिस मुक़ाम पर सालिक को अल्लाह का इतना क़ुर्ब हासिल हो जाता है, उसे लिक़ा (अल्लाह का दीदार) का दर्जा कहते हैं। इस क़ुरबत में इंसान से ऐसे काम होते हैं जो इंसानी ताक़त से बढ़कर लगते हैं, और वे इलाही ताक़त का रंग लिए होते हैं।

जैसे हमारे सरदार और पैग़ंबरों के सरदार, हज़रत ख़ातमन नबिय्यीन हज़रत मोहम्मद मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने जंग-ए-बदर में कुफ़्फ़ार पर एक मुट्ठी कंकड़ फेंकी। यह मुट्ठी किसी दुआ के ज़रिए नहीं, बल्कि आपकी अपनी रूहानी ताक़त से फेंकी गई थी। लेकिन इस मुट्ठी ने ख़ुदाई ताक़त का प्रदर्शन किया, जिससे दुश्मनों की फौज पर ऐसा अद्भुत असर हुआ कि उनमें से कोई भी ऐसा नहीं था जिसकी आंख पर उसका असर न पहुंचा हो। वो सभी अंधों की तरह हो गए और उन पर ऐसी अफ़रा-तफ़री और बेचैनी छा गई कि वह दीवानों की तरह भागने लगे।

इस तरह के और भी बहुत से मोज़ज़ात (चमत्कार) हैं, जो केवल आपकी व्यक्तिगत ताक़त से दिखाई दिए, जिनके साथ कोई दुआ नहीं थी। कई बार आपने थोड़े से पानी को, जो सिर्फ़ एक प्याले में था, अपनी उंगलियों को उसमें डालकर इस क़दर बढ़ा दिया कि समस्त लश्कर, ऊंट और घोड़ों ने वह पानी पिया, फिर भी वह

पानी उसी माला में मौजूद रहा। इसी तरह कई बार आपने दो-चार रोटियों पर हाथ रखकर हज़ारों भूखे-प्यासे लोगों का पेट भर दिया। और कुछ मौक़ों पर आपने थोड़ा दूध अपने होंठों की बरकत से एक पूरी जमाअत का पेट भर दिया। कई बार कड़वे और नमकीन पानी के कुएं में अपना लुआब डालकर उसे बेहद मीठा कर दिया। इसी तरह, जब कुछ लोग लड़ाई के दौरान बुरी तरह ज़ख्मी हो जाते थे, तो आपने उन पर हाथ रखकर उन्हें ठीक कर दिया। कई बार, जिनकी आंखें लड़ाई के सदमे से बाहर निकल आई थीं, उन्हें आपने अपने हाथ की बरकत से फिर से ठीक कर दिया।

इसी तरह के और भी कई काम आपने अपनी व्यक्तिगत ताक़त से किए, जिनमें एक छुपी हुई इलाही ताक़त मिली हुई थी।

(आइना-ए-कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी ख़ज़ायन, भाग 5, पृष्ठ 65-66)

ख़ंदक की खुदाई के दौरान मुनाफ़िक़ों (कपटियों) और मोमिनों (विश्वासियों) की हालत का वर्णन भी मिलता है। इसकी तफ़्सील (विवरण) इस तरह है: इब्न-ए-इसहाक़ ने लिखा है कि कई मुनाफ़िक़ों ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम और मुसलमानों के काम में शामिल होने में आलस दिखाई। वे थोड़ा सा काम करते और बिना बताए या इजाज़त लिए अपने घर चले जाते। इसके विपरीत, जब मुसलमानों में से किसी को कोई ज़रूरत होती, तो वे नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की खिदमत में हाज़िर होते और इजाज़त तलब करते। यह मोमिनों की हालत थी। मुनाफ़िक़ बिना पूछे चले जाते थे, जबकि मोमिन इजाज़त लेकर जाते और जैसे ही उनकी ज़रूरत पूरी होती, वापस आ जाते थे।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 4, पृष्ठ 370, दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत) रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की जंग की तैयारी की और तफ़्सील भी वर्णन की गई है। इसमें लिखा है कि रिवायतों (कथाओं) के मुताबिक़, अबू सूफियान की फ़ौज की आमद से तीन दिन पहले ख़ंदक तैयार हो चुकी थी। योजना के मुताबिक, ख़ंदक में काम करने वाले बच्चों और नौजवानों को उन क़िलों की तरफ़ भेज दिया गया, जहाँ औरतों को हिफ़ाज़त की ग़रज़ से रखा गया था। जबकि, जिनकी उम्र पंद्रह साल थी, उन्हें इजाज़त दी गई कि वे चाहें तो यहाँ रहें या फिर वापस क़िलों में चले जाएं। जिन नौजवानों को जंग में शामिल होने की इजाज़त दी गई, उनमें हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़ियल्लाहु अन्हो, हज़रत अबू सईद ख़ुदरी रज़ियल्लाहु अन्हो और हज़रत बरा बिन आज़िब रज़ियल्लाहु अन्हो शामिल थे।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 4, पृष्ठ 371, दारुलकुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत) (ग़ज़वा ए अहज़ाब बाई बाशमील, पृष्ठ 175, नफ़ीस अकैडमी, कराची) (विकिपीडिया, ग़ज़वा ए ख़ंदक)

इब्न हशशाम के क़ौल के मुताबिक़, हज़रत मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मदीना पर अपना नायब (उत्तरी अधिकारी) हज़रत इब्न उम्म मक्तूम रज़ियल्लाहु अन्हो को बनाया और आपने सला पहाड़ के सामने डेरा डाला। सला मदीना के उत्तरी हिस्से में एक पहाड़ है, जो आजकल मस्जिद-ए-नब्वी से लगभग पाँच सौ मीटर की दूरी पर स्थित है। आपने इस पहाड़ को अपने पीछे रखा और ख़ंदक को सामने रखा। आपके साथियों का लश्कर भी वहीं था और आपके लिए चमड़े का एक ख़ैमा लगाया गया। मुहाजेरीन का झंडा हज़रत ज़ैद बिन हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हो को और अंसार का झंडा हज़रत सअद बिन उबादा रज़ियल्लाहु अन्हो को दिया गया।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 4, पृष्ठ 371, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत) (विकिपीडिया, सला पहाड़)

मुसलमानों की संख्या के बारे में इतिहासकारों ने कई अलग-अलग विवरण दिए हैं। किसी के अनुसार यह संख्या नौ सौ से अधिक नहीं थी, किसी के अनुसार सात सौ, जबकि कुछ के अनुसार दो हज़ार और किसी के अनुसार तीन हज़ार थी।

(सब्लुल् हुदा वल् रिशाद , भाग 4, पृष्ठ 371, दारुल कुतुब अल-इल्मिय्या, बेरूत)(ग़ज़वा अहज़ाब बाई बाशमील, पृष्ठ 178, नफ़ीस अकैडमी, कराची)(अस-सहीह मिन सीरातुन्नबी सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम अल-आज़म, पृष्ठ 297, भाग 10)(सीरत एन्साइक्लोपीडिया, पृष्ठ 300, दारुस्सलाम)

मुसलमानों की संख्या अलग-अलग जगहों पर अलग बताई गई है। इतिहासकारों को इस संख्या के बारे में सही जानकारी देने में काफ़ी कठिनाई हुई है। जब वे इसका उल्लेख करते हैं, तो किसी एक विवरण को प्राथमिकता देकर बाकी विवरणों को ग़लत ठहरा देते हैं। लेकिन हज़रत मसीह मौऊद रज़ियल्लाह तआला अन्हु ने बड़ी सूझ-बूझ से इन सभी विवरणों को एक-दूसरे के साथ मिलाते हुए उनकी व्याख्या की है। आप फ़रमाते हैं कि "इस अवसर पर मुसलमानों के लश्कर की संख्या को लेकर इतिहासकारों में काफ़ी असहमति है। कुछ ने इस लश्कर की संख्या तीन हज़ार बताई है, कुछ ने बारह सौ या तेरह सौ, और कुछ ने सात सौ बताई है। यह इतना बड़ा अंतर है कि इसका समाधान बेशक़ मुश्किल लगता है और इतिहासकार इसे सुलझा नहीं पाए। लेकिन मैंने इसकी सच्चाई को पा लिया है, और वह यह कि तीनों तरह के विवरण सही हैं।

यह बताया जा चुका है कि जंग-ए-उहद में मुनाफ़िक़ों के वापस चले जाने के बाद मुसलमानों का लश्कर सिर्फ़ सात सौ लोगों पर आधारित था। जंग-ए-अहज़ाब इसके सिर्फ़ दो साल बाद हुई, और इस दौरान कोई बड़ा क़बीला इस्लाम लाकर मदीना में नहीं बसा। इसलिए यह मुमकिन नहीं कि सात सौ लोग अचानक तीन हज़ार हो गए हों।" यह संभव नहीं कि वे सात सौ लोग अचानक तीन हज़ार हो गए हों, जबकि बाहर से कोई नई आबादी भी नहीं आई। "दूसरी तरफ़ यह भी मुमकिन नहीं कि उहद के दो साल बाद, इस्लाम की तरक़्क़ी के बावजूद, जंग के लायक मुसलमान उतने ही रहे जितने उहद के समय थे।" कुछ न कुछ संख्या ज़रूर बढ़ी होगी। "इसलिए इन दोनों तर्कों के बाद यही विवरण सही मालूम होता है कि जंग-ए-अहज़ाब के समय जंग के लायक मुसलमान लगभग बारह सौ थे।

अब प्रश्न यह है कि किसी ने तीन हज़ार और किसी ने सात सौ क्यों लिखा? इसका उत्तर यह है कि ये दो विवरण अलग-अलग हालात और नज़रियों के आधार पर दिए गए हैं। जंग-ए-अहज़ाब के तीन हिस्से थे। एक हिस्सा वह था जब दुश्मन अभी मदीना के सामने नहीं आया था और ख़ंदक खोदी जा रही थी। इस काम में बच्चों और कुछ औरतों की मदद भी ली जा सकती थी। इसलिए जब तक ख़ंदक खोदने का काम रहा, मुसलमानों की संख्या तीन हज़ार थी, जिसमें बच्चे भी शामिल थे। सहाबियात औरतों के जोश को देखते हुए यह कहा जा सकता है कि इस संख्या में कुछ औरतें भी शामिल थीं, जो ख़ंदक खोदने का काम तो नहीं करती होंगी, लेकिन अन्य कामों में हिस्सा ले रही होंगी। यह केवल मेरा विचार नहीं है," आप फ़रमाते हैं कि यह मेरा ख़्याल नहीं है, बल्कि "इतिहास से भी इस विचार की पुष्टि होती है। लिखा गया है कि जब ख़ंदक खोदने का वक्त आया, तो सारे लड़के भी इकट्ठा किए गए और सभी मर्द, चाहे बड़े हों या बच्चे, ख़ंदक खोदने या उसमें मदद देने का काम करते थे।"

फिर जब दुश्मन आ गया और लड़ाई शुरू हुई, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने उन सभी लड़कों को जो पंद्रह साल से कम उम्र के थे, वापस जाने का हुक्म दिया, और जो पंद्रह साल के हो चुके थे, उन्हें इजाजत दी कि चाहे ठहरें या वापस जाएं।

इस रिवायत से मालूम होता है कि ख़ंदक खोदने के वक्त मुसलमानों की संख्या ज़्यादा थी, और जब जंग शुरू हुई, तो यह संख्या कम हो गई क्योंकि नाबालिगों को वापस जाने का हुक्म दे दिया गया था। इसलिए जिन रिवायतों में तीन हज़ार की संख्या का वर्णन आया है, वे ख़ंदक खोदने के वक्त की संख्या बता रही हैं, जिसमें छोटे बच्चे भी शामिल थे। और जैसा कि मैंने दूसरी लड़ाइयों से अंदाज़ा लगाया है, कुछ औरतें भी शामिल थीं। क्योंकि बाकी जंगों की रिवायतों में मिलता है कि औरतें भी शामिल होती थीं।

लेकिन बारह सौ की संख्या उस वक्त की है जब जंग शुरू हो गई और केवल बालिग़ मर्द रह गए। अब प्रश्न यह है कि तीसरी रिवायत, जो सात सौ सिपाही बताती है, क्या वह भी सही है? तीन हज़ार से बारह सौ तक तो मान लिया, अब देखना है कि क्या सात सौ वाली रिवायत भी सही है? इसका उत्तर यह है कि यह रिवायत इब्न इस्हाक़ ने वर्णन की है, जो एक बहुत विश्वसनीय इतिहासकार हैं, और इब्न हज़्म जैसे महान आलिम ने इसकी ज़ोरदार तस्दीक की है। इसलिए इस पर शक नहीं किया जा सकता। और इसकी तस्दीक इस तरह भी होती है कि तारीख़ की और तहकीक से मालूम होता है कि जब जंग के दौरान बनू क़ुरैज़ा काफिरों के लश्कर से मिल गए और उन्होंने यह इरादा किया कि अचानक मदीना पर हमला कर दें, और उनके इरादों का राज़ फाश हो गया, तो रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने मदीना की उस तरफ़ की हिफाज़त को भी ज़रूरी समझा, जिधर बनू क़ुरैज़ा थे। यह इलाका पहले इसलिए बिना हिफाज़त के छोड़ा गया था क्योंकि बनू क़ुरैज़ा हमारे सहयोगी थे और यह दुश्मन को उस तरफ़ से आने नहीं देंगे।

इसलिए तारीख़ से मालूम होता है कि जब बनू क़ुरैज़ा की ग़द्दारी का हाल पता चला, क्योंकि महिलाओं को बनू क़ुरैज़ा के भरोसे उस इलाक़े में रखा गया था, जहां उनके किले थे, और वह बिना हिफाज़त के थीं। रसूल-ए-करीम सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने अब उनकी हिफाज़त को ज़रूरी समझा और दो मुसलमान लश्कर तैयार किए और औरतों के रहने के दोनों हिस्सों पर तैनात किए। मसलमा इब्न असलम रज़ियल्लाहु अन्हु को दो सौ सहाबा देकर एक जगह तैनात किया और ज़ैद बिन

हारिसा रज़ियल्लाहु अन्हु को तीन सौ सहाबा देकर दूसरी जगह तैनात किया, और हुक्म दिया कि थोड़े-थोड़े वक़्त बाद ऊंची आवाज़ में तकबीर कहते रहें ताकि यह पता चलता रहे कि औरतें महफ़ूज़ हैं।

इस रिवायत से हमारी यह मुश्किल हल हो जाती है कि इब्न इस्हाक़ ने जंग-ए-ख़ंदक में सात सौ सिपाहियों का वर्णन क्यों किया। क्योंकि बारह सौ सिपाहियों में से जब पांच सौ सिपाही औरतों की हिफ़ाज़त के लिए भेजे गए, तो बारह सौ का लश्कर केवल सात सौ रह गया। इस तरह जंग-ए-ख़ंदक के सिपाहियों की संख्या को लेकर जो बड़ा अंतर इतिहास में पाया जाता है, वह भी हल हो गया।

(दीबाचा तफ़्सीरुल्-क़ुरआन, अनवारुल् उलूम, भाग 20, पृष्ठ 269-271)

मुशरिकों के मदीना पहुँचने और इसके बाद की घटनाओं का विवरण इस प्रकार दिया गया है कि अबू सुफियान की कयादत में क़ुरैश मक्का और दूसरे क़बीलों की फौज मदीना पहुँच गई और मदीना के चारों तरफ़ डेरा डाल दिया। इसका विवरण हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब रज़ियल्लाहु अन्हु ने इस तरह वर्णन किया है: "करीब बीस दिन या एक रिवायत के मुताबिक़ छः दिन-रात लगातार सुबह-शाम की मेहनत से यह लंबी खंदक (खाई) पूरी हुई। और इस ग़ैरमामूली मेहनत और मेहनतकश प्रयास ने सहाबा (साथियों) को बिल्कुल थका दिया। लेकिन इधर यह काम पूरा हुआ और उधर यहूद और अरब के मुश्रिकों की सेना, अपनी ताकत और संख्या के नशे में चूर, मदीना के आसमान पर उभर आई। सबसे पहले अबू सुफियान ने उहुद की पहाड़ी की ओर रुख किया, लेकिन उस जगह को वीरान पाकर, वह मदीना की उस दिशा में बढ़ा जो शहर पर हमला करने के लिए मुनासिब थी, लेकिन जिसके सामने अब खंदक खोदी गई थी। जब काफ़िरों की फौज उस जगह पहुँची, तो खंदक को रास्ते में रुकावट पाकर सब लोग हैरान-परेशान हो गए और मजबूर हो गए कि खंदक के पार खुले मैदान में डेरा डालें।

दूसरी तरफ़, जब काफ़िरों की फौज के आने की खबर मिली, तो रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम भी तीन हज़ार मुसलमानों को साथ लेकर शहर से निकले और खंदक के पास पहुँचकर, शहर और खंदक के बीच सल्ला पहाड़ी को अपनी पीठ के पीछे रखते हुए डेरा डाला। चूँकि खंदक बहुत चौड़ी नहीं थी और कुछ हिस्से ऐसे थे कि मज़बूत और चौकन्ने सवार उन्हें कूद कर शहर की ओर आ सकते थे, और फिर मदीना के वे इलाके जहाँ खंदक नहीं थी, जिनकी रक्षा केवल मकान, बाग और बेढंगे चट्टानों से हो रही थी, उनकी हिफ़ाज़त भी ज़रूरी थी ताकि दुश्मन इस तरफ से मकानों को नुकसान पहुँचाकर या किसी चाल के तहत छोटे-छोटे दस्तों में शहर पर हमला न कर सके। इसलिए रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम ने सहाबा को अलग-अलग दस्तों में बाँटकर खंदक के विभिन्न हिस्सों पर और मदीना के दूसरी दिशाओं में सुरक्षा के पहरे लगाने के आदेश दिए और ताकीद की कि चाहे दिन हो या रात, किसी वक्त भी यह पहरा ढीला या लापरवाह न होने पाए। दूसरी तरफ़ जब काफिरों ने देखा कि खंदक की रुकावट के कारण खुले मैदान की लड़ाई या शहर पर आम हमले का तरीका नामुमकिन हो गया है, तो उन्होंने भी घेराबंदी के तरीके से मदीना का घेरा डाल लिया और खंदक के कमज़ोर हिस्सों का फायदा उठाने का मौक़ा ढूँढ़ने लगे।"

(सीरत-ए-ख़ातिमुन्नबियीन हज़रत साहिबज़ादा मिर्ज़ा बशीर अहमद साहिब एम.ए., पृष्ठ 583-584)

बहरहाल, जब दुश्मन खंदक पार करने में नाकाम रहा, तो दूसरी चालें चलने लगा। इसका विवरण इतिहास में इस प्रकार दिया गया है कि मुश्रिकों ने मदीना को चारों तरफ़ से घेर लिया, लेकिन समस्त कोशिशों के बावजूद वे खंदक को किसी भी जगह से पार नहीं कर सके और न ही मुसलमानों पर खुलकर हमला कर सके।

इस लाचारगी और बेबसी की हालत को देखकर अबू सुफियान और बनू नज़ीर के सरदार हुवैया बिन अख़तब आदि ने एक और साज़िश का योजना बनाया कि मदीना के अंदर मौजूद यहूदी क़बीले बनू क़ुरैज़ा को किसी न किसी तरह तैयार किया जाए कि वह मुसलमानों के साथ किए गए समझौते को तोड़ दे और हमारे साथ मिल जाए और वह अंदर से मदीना वालों पर हमला कर दे।

चूंकि इस भयानक साज़िश को अमली जामा पहनाने के लिए हुवैया बिन अख़तब बनू क़ुरैज़ा के सरदार क़ाब बिन असद क़ुरैज़ी के पास आया। जब काब ने उसके आने की ख़बर सुनी तो किले का दरवाज़ा बंद कर दिया। हुवैया ने अंदर आने की अनुमति मांगी तो काब ने दरवाज़ा खोलने से इंकार कर दिया। हुवैया ने आवाज़ देकर कहा, "हे काब! तेरा नाश हो, दरवाज़ा खोल दे।" काब ने कहा, "ऐ हुवैया! तू बदक़िस्मत आदमी है। मैंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से समझौता कर लिया है। मैं इस वादे को नहीं तोड़ूंगा और मैंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमेशा सच्चा और समझौतों का पालन करने वाला पाया है।"

एक तरफ तो यह वर्णन दिया, लेकिन आगे जाकर बदल गया। फिर उसने कहा, "दरवाज़ा खोल। मैंने तुझसे कुछ बातें करनी हैं।" काब ने कहा, "अल्लाह की क़सम! मैं ऐसा नहीं करूंगा।" लेकिन कुछ तकरार के बाद आखिरकार काब ने दरवाज़ा खोल दिया तो हुवैया ने कहा, "ऐ काब! तेरा नाश हो। मैं तेरे पास ज़माने की इज़्ज़त और ठाठें मारता समंदर लाया हूँ। मैं तेरे पास क़ुरैश के कायदों और सरदारों को लाया हूँ," और उसने उन सभी क़बाइल की तफ़सील बताईं जो अपनी फौजों के साथ मदीना के चारों ओर मुसलमानों का घेरा डाले हुए थे और साथ यह भी बताया कि "हमने आपस में पक्की कसम खाई है कि अब यहाँ से मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम और उनके साथियों का क़िलाक़ामी किए बिना वापस नहीं जाएंगे, और हम इसमें सफल भी हो चुके होते अगर हमारे रास्ते में यह खंदक रुकावट न बनती।"

लेकिन यह सारी बातें सुनकर भी बनू क़ुरैज़ा का सरदार काब समझौता तोड़ने पर आमादा न हुआ और उसने कहा, "अल्लाह की क़सम! तू मेरे पास ज़माने की ज़िल्लत और ऐसा बादल लाया है जिसमें पानी नहीं है। वह सिर्फ गर्जना और चमक दिखाता है, इसमें कोई चीज़ नहीं है।

"हे हुवैया! तेरा नाश हो। मुझे मेरे हाल पर छोड़ दो क्योंकि मैंने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को हमेशा ज़बान का सच्चा और वादा निभाने वाला पाया है। बार-बार यही कह रहा है कि आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम सच्चे और वादा निभाने वाले हैं। वह न तो हम पर कोई ज़बरदस्ती करते हैं और न ही हमारे धर्म में किसी किस्म की दखलअंदाज़ी करते हैं। वह हमारा बेहतरीन पड़ोसी है। इसलिए तुम वापस चले जाओ। ऐसा न हो कि हमारा भी वही अंजाम हो जो हमसे पहले तुम्हारे लोगों का हुआ है।"

लेकिन हुवैया काब को बहलाता और फुसलाता रहा यहाँ तक कि उसने अपने कबीले और बनू क़ाइनक़ा के दुखों और मुसीबतों का जिक्र किया और यह कहा कि सारी तकलीफें इन्हीं मुसलमानों की वजह से हमें मिल रही हैं। यहाँ तक कि आखिरकार वह काब के दिल को नरम करने में सफल होने लगा और काब भी अंततः उसकी बातों में आ गया। उसकी जो फितरत वादा तौड़ना थी, वह गालिब आने लगी और हुवैया से कहा, "अच्छा, अगर मैं तुम्हारी बात मान लूँ, लेकिन अगर क़ुरैश और ग़तफ़ान वापस चले गए और मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को क़त्ल न कर सके, तो फिर हमारा क्या बनेगा?" इस पर हुवैया ने कहा, "तू परेशान न हो। ऐसी स्थिति में मैं तेरे साथ तेरे किले में दाखिल हो जाऊँगा और जो मुसीबत तुझ पर आएगी, वह मुझ पर भी आएगी।"

इस सारी बातचीत के बाद आखिरकार काब बिन असद ने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से किए गए समझौते को तोड़ दिया। इस अवसर पर काब के साथी अम्र बिन सऊद ने उन्हें वाज़-ओ-नसीहत की और उनके बुरे कर्म से उन्हें डराया और उन्हें रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का पक्का वादा याद दिलाया और कहा, "अगर तुम मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की मदद नहीं करते, तो उन्हें और उनके दुश्मनों को छोड़ दो, लेकिन वादा-शिकनी करते हुए हमलावरों का साथ मत दो।" लेकिन उसने इंकार कर दिया।

इस स्थिति को देखकर बनू क़ुरैज़ा में से कुछ लोग जो इन यहूदियों में से नेक फितरत थे, रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के पास चले गए और इस्लाम भी ले आए।

हज़रत उमर बिन खत्ताब रज़ियल्लाहु अन्हो को बनू क़ुरैज़ा के वादा तोड़ने की खबर मिली तो उन्होंने रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम को इसकी सूचना दी। तो आपने सआद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और सआद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो को भेजा। ये दोनों अपनी कौम के सरदार थे और इनके साथ अब्दुल्लाह बिन रवाह रज़ियल्लाहु अन्हो और खवत बिन जुबैर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी भेजा। एक रिवायत के अनुसार साथ में उसैद बिन हुज़ैर रज़ियल्लाहु अन्हो को भी भेजा और कहा कि तुम जाओ और जाकर देखो कि इस कौम के बारे में जो हमें खबर मिली है, वह सच्ची है या नहीं। अगर यह खबर सच्ची हो तो सब लोगों के सामने यह बात न बताना, बल्कि इशारे में मुझे बताना ताकि मैं जान लूँ कि यह खबर सच्ची है। और अगर वे समझौते में कायम हैं और यह खबर झूठी हो, तो अलैन करके यह बात सबके सामने बता देना।

चूंकि यह वफद बनू क़ुरैज़ा के पास गया। वहाँ जब काब और उसके साथियों से बात हुई तो उनके तेवर ही बदले हुए थे। जब काब से कहा गया कि तुमने मोहम्मद सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम से समझौता किया हुआ है, तो उसने बड़ी तिरस्कार से कहा, "कौन रसूल? हमारा कोई समझौता नहीं है। मैंने इस समझौते को ऐसे तोड़ दिया जैसे जूते के तस्मे को तोड़ दिया जाता है।" रिवायात के अनुसार इस अवसर पर

फरीक़ीन की तरफ से सख्त कलामी भी हुई।

बहरहाल, यह वफद वापस आया और इशारे से बात करते हुए नबी अकरम सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की खिदमत में अर्ज कर दिया। तो ऐसे अति तनाव और होश-ओ-हवास खो देने वाले लम्हात के अवसर पर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम ने कुछ देर खामोशी के बाद फ़रमाया। आप पर कोई असर नहीं हुआ। आम आदमी के तो नसें टूट जाती हैं। आपने फ़रमाया:

"أَبْشِرُوْا يَامَعْشَرَ الْمُؤْمِنِيْنَ بِنَصْرِ اللهِ تَعَالٰى وَ عَوْنِهٖ۔"

"हे मोमिनों की जमाअत! अल्लाह तआला की मदद और नसरत के साथ खुश हो जाओ।"

फिर फ़रमाया: मुझे विश्वास है कि एक वक्त आएगा जब मैं ख़ाना काबा का तवाफ़ कर रहा होऊँगा और उसकी चाबियाँ मेरे हाथ में होंगी और किसरा और क़ैसर ज़रुर हलाक हो जाएंगे और उनके माल अल्लाह के रास्ते में ख़र्च किए जाएंगे।

(सब्लुल्-हुदा वल्-रिशाद, खंड 4, पृष्ठ 373-374, दारुलकुतुब अल् इल्मिया-बेरुत)

हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब ने बनू क़ुरैज़ा की गद्दारी के बारे में वर्णन किया है। लिखते हैं कि "अबू सूफ़यान ने यह चाल चली कि कबीला बनू नज़ीर के यहूदी रईस हुवैया बिन अख़तब को यह हिदायत दी कि वह रात की अंधेरी में बनू क़ुरैज़ा के क़िले की तरफ जाए और उनके रईस काब बिन असद के साथ मिल कर बनू क़ुरैज़ा को अपने साथ मिलाने की कोशिश करे। चूंकि हुवैया बिन अख़तब अवसर पर जाकर काब के मकान पर पहुंचा। शुरू में तो काब ने उसकी बात सुनने से इंकार किया और कहा कि मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ हमारे अहेद और पैमाने हैं और मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने हमेशा अपने अहेद और पैमाने को वफादारी के साथ निभाया है, इसलिए मैं इससे गद्दारी नहीं कर सकता। लेकिन हुवैया ने उसे ऐसे हसीन ख्वाब दिखाए और इस्लाम की जल्द तबाही का ऐसा यकीन दिलाया और अपने इस अहेद को कि जब तक हम इस्लाम को मिटा न लें, मदीना से वापस नहीं जाएंगे, इस ज़ोर से वर्णन किया कि आखिरकार वह राजी हो गया। और इस तरह बनू क़ुरैज़ा की ताकत का वज़न भी इस पलड़े के वज़न में आकर शामिल हो गया जो पहले से ही बहुत झुका हुआ था।" अर्थात इन काफिरों की संख्या तो पहले ही बहुत अधिक थी, इनमें एक और वज़न इन यहूदियों की अहेद-शिकनी का पड़ गया।

"आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को जब बनू क़ुरैज़ा की इस खतरनाक गद्दारी का इल्म हुआ तो आपने पहले तो दो-तीन बार खुफ़िया तौर पर ज़ुबैर बिन अल् अवाम रज़ियल्लाहु अन्हो को हालात के लिए भेजा। और फिर योजनाबद्ध कबीला आवस और ख़ज़राज के रईस सआद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और सआद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो और कुछ दूसरे बअसर सहाबा को एक वफ़्द के तौर पर बनू क़ुरैज़ा की तरफ रवाना फ़रमाया और उन्हें यह ताकीद फ़रमाई कि अगर कोई चिंताजनक खबर हो तो वापस आकर इसका बर्मला इज़्हार न करें, बल्कि इशारे में काम लें ताकि लोगों में चिंता न पैदा हो। जब ये लोग बनू क़ुरैज़ा के मकानों में पहुंचे और उनके रईस काब बिन असद के पास गए तो वह बदक़िस्मत उन्हें निहायत मग़रूराना अंदाज़ से मिला और सआदिन रज़ियल्लाहु अन्हो की तरफ से समझौते का वर्णन होने पर वह और उसके कबीले के लोग बिगड़कर बोले कि "जाओ मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और हमारे बीच कोई समझौता नहीं है।" यह शब्द सुनकर सहाबा का यह वफ़्द वहाँ से उठकर चला आया और सआद बिन मुआज़ रज़ियल्लाहु अन्हो और सआद बिन उबादह रज़ियल्लाहु अन्हो ने आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की खिदमत में हाज़िर होकर उचित तरीके से आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हालात से इत्तिला दी।"

(सीरत ख़ातमन नबिय्यीन सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम से लेखनी हज़रत मिर्ज़ा बशीर अहमद साहब एम.ए रज़ियल्लाहु अन्हु पृष्ठ 584-585)

कभी-कभी हमारे युवा भी गैरों की बातें सुन कर प्रश्न कर देते हैं कि बनू क़ुरैज़ा पर इस वक्त क्यों यह ज़ुल्म किया गया? उन्होंने समझौता तोड़ा था इसलिए उन्हें इसकी सज़ा दी गई थी। कोई ज़ुल्म नहीं था जो आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की तरफ से उन पर हो। बहरहाल, इस बारे में और भी तफसील है और हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो ने भी बड़ी तफ़सील से वर्णन किया है। इसका वर्णन इन शा अल्लाह आगे करूंगा।

आज से खुद्दामुल् अहमीदिया का इज्तिमा भी शुरू हो रहा है। खुद्दाम इस से भरपूर फ़ायदा उठाने की कोशिश करें। हालाँकि मौसम की भविष्यवाणी यही है कि शायद बारिशें होती रहें, लेकिन बहरहाल अल्लाह तआला फ़ज़्ल फ़रमाए और आराम से उनके प्रोग्राम हो जाएं। इन दिनों में खुद्दाम रूहानी और इलमी मियारों को बढ़ाने की भी कोशिश करें। जिन दुआओं और दुरूद की तरफ मैंने तवज्जुह दिलाई थी और इसकी तहरीक की थी। इन दिनों में इस तरफ भी ख़ास तवज्जुह रखें और हमेशा दोहराते रहें। अल्लाह तआला हर किस्म के शैतानी हमलों से हर एक को बचाए।

कुछ जनाज़े भी आज पढ़ाऊंगा। उनका वर्णन कर दूं। पहला वर्णन है श्रीमान हबीबुर्रहमान ज़ीरवी साहब रब्वा का, जो पिछले दिनों तिहत्तर (73) साल की उम्र में वफ़ात पा गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वो मूसी थे और वक़्फ़ी ज़िंदगी थे। उनके पिता का नाम सूफ़ी ख़ुदा बख्श ज़ीरवी था। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके पिता सूफ़ी ख़ुदा बख्श ज़ीरवी साहब के ज़रिए हुआ, जिन्होंने 1928 में हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो के हाथ पर बैयत की सआदत हासिल की। हबीबुर्रहमान ज़ीरवी साहब ने शुरुआती तालीम रब्वा से हासिल की। फिर पंजाब यूनिवर्सिटी से लाइब्रेरी साइंस में एम एस सी की। 1981 में उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ की और उनका वक़्फ़ मंज़ूर हुआ। फिर 1981 में असिस्टेंट लाइब्रेरियन के तौर पर उनका तैनाती हुआ। तीन-चार साल इंचार्ज खलाफ़त लाइब्रेरी के तौर पर भी उन्हें सेवा की तौफीक़ मिली। फिर उनका तैनाती नज़ारत इशाअत में हुआ। फिर ताहिर फ़ाउंडेशन में उनका तैनाती हुआ और इस समय आप बतौर नायब नाज़िर दीवान सदर अंजुमन अहमदिया सेवा की तौफीक़ पा रहे थे। खुद्दाम अहमदिया में भी मोहतमिम् के तौर पर विभिन्न सेवाओं का उन्हें मौक़ा मिला। अंसारुल्लाह में भी केंद्रीय कायद के तौर पर उन्हें सेवा की तौफीक़ मिली। उन्होंने बड़ी मेहनत से हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्हो की वर्णन फ़रमाई हुई सीरत हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम को विभिन्न किताबों से एकजुट करके एक किताब भी तैयार की, जो "तज़करतुल मह्दी" के नाम से प्रकाशित हो चुकी है। इसके अलावा, वे कई मसौदों पर काम कर रहे थे, जिनमें से कुछ विभिन्न मरहलों में हैं। अल्लाह तआला ने उन्हें एक बेटे और दो बेटियों से नवाज़ा। ख़िलाफ़त के साथ उनका बड़ा ताल्लुक़ था। बड़े ख़ामोश मिज़ाज और अपने काम से काम रखने वाले थे। उनके सुपुर्द जो भी सेवा की जाती, उसे अच्छे से निभाते। हमेशा वक़्फ़ का हक़ अदा किया और जुनून से काम किया। बड़े मिलनसार, ख़ुश-मिजाज शख्सियत के मालिक थे। अल्लाह तआला उनसे मगफिरत और रहम का सुलूक फ़र्माए। उनके बच्चों को भी नेकी पर कायम होने की तौफीक़ दे।

दूसरा वर्णन डॉक्टर सैयद रियाज़ुल् हसन साहब का है। उनकी भी पिछले दिनों फ़ातिह हुई है। अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से वह मूसी थे। ब्रिगेडियर डॉक्टर ज़ियाउल् हसन साहब के ये बेटे थे। उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ की और डॉक्टर के तौर पर सेवा बजा लाते रहे। छोटी उम्र से ही ये जमाअत की सेवा कर रहे थे। मजलिस नुसरत जहाँ के तहत लगभग बीस साल से अधिक समय यूगांडा, केन्या, गाम्बिया और पाकिस्तान में भरपूर सेवा की उन्हें तौफीक़ मिली। केन्या में कई सालों की सेवा के बाद उन्होंने स्पेशलाइज़ेशन और जनरल सर्जन की ट्रेनिंग के लिए इजाज़त मांगी और वहां से पाकिस्तान चले गए और कई मेडिकल डिप्लोमा और सर्टिफिकेट हासिल किए। उन्हें मेडिकल यूनिवर्सिटी में डॉक्टरों को एनाटॉमी पढ़ाने की भी तौफीक़ मिली। अच्छे योग्य डॉक्टर थे। गाम्बिया के स्थानीय छात्रों की आर्थिक मदद करते। उनकी तालीम को स्पॉन्सर करते। काम ढूंढने में उनकी मदद करते। गरीबों और ज़रूरतमंदों की आर्थिक मदद के लिए हर समय तैयार रहते। उनकी एक बहुत बड़ी ख़ूबी ये भी थी कि वो बहुत दुआगू और तहज्जुद गुज़ार थे। जवानी से ही तहज्जुद की उन्हें आदत थी। आपके जानने वाले लिखते हैं कि अत्यंत मिलनसार, मरीजों से सच्ची शफ़क़त और हमदर्दी और मोहब्बत करने वाले थे। मेहनती, उत्साही, तवक्कुल अलल्-ल्लाह इंसान थे। दुआगो और शफकत पैकर थे। आपकी शख्सियत में सादगी, आज़िज़ी और सेवा का बेपनाह जज़्बा था। बहुत खुश-अख़लाक़ थे। वक़्फ़-ए-ज़िंदगी का बहुत इज़्ज़त करते थे। अल्लाह तआला मरहूम से मगफिरत और रहम का सुलूक फ़र्माए।

तीसरा वर्णन श्रीमान प्रोफेसर अब्दुलजलील सादिक साहब रब्वा का है, जिनकी पिछले दिनों अस्सी (80) साल की उम्र में फ़ातिह हो गई। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। ये भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। क़ुरैशी अब्दुल गनी साहब रब्वा के ये बेटे थे। उनके ख़ानदान में अहमदियत का नफ़ूज़ उनके दादा हज़रत मियां क़ुत्बुद्दीन साहब आफ़ गोलिकी ज़िला गुजरात और नाना हज़रत मौलवी मोहम्मद उस्मान साहब अमीर जमाअत डेरा गाज़ी ख़ान के ज़रिए हुआ। जलील सादिक साहब ने पॉलिटिकल साइंस में एम.ए. किया। फिर 1964 में तालीमुल इस्लाम कॉलेज में उस्ताद निर्धारित हुए। फिर 66 में उन्होंने एम.ए. इंग्लिश किया और फिर उनका तालीमुल इस्लाम कॉलेज के विभाग इंग्लिश में बायाक़ी तैनाती हो गई। लगातार उन्हें अठारह साल तक

बायाक़ी तदरीस में सेवा बजा लाते रहे। मैं भी कॉलेज में उनका शागिर्द रहा हूँ। बड़े ख़ामोश मिज़ाज और बड़े प्यार से पढ़ाने वाले उस्ताद थे। शागिर्दों के साथ बहुत अच्छा ताल्लुक़ रखने वाले, शागिर्दों की इज़्ज़त करने वाले थे। रिटायरमेंट के बाद 2003 में उन्होंने ज़िंदगी वक़्फ़ कर दी और उनका तैनाती सदर, सदर अंजुमन अहमदिया के विभाग तरतीबव रिकार्ड के इंचार्ज के तौर पर हुआ, जहाँ वह नायब नाज़िर थे। मज्लिस खुद्दाम अहमदिया में विभिन्न जगहों पर बतौर मोहतमिम् उन्हें सेवा की तौफीक़ मिली। ये सदर मज्लिस सेहत पाकिस्तान भी थे। फिर 1983 से ये केंद्रीय कज़ा में पाकिस्तान में क़ाज़ी भी थे। अपने मोहल्ले की सदर के तौर पर भी उन्हें तौफीक़ मिली। दो बेटियाँ और एक बेटा है। उनके बारे में लिखने वाले कहते हैं और बड़े सही कहते हैं कि बड़े नफ़ीस मिज़ाज, दरवेश सिफ़त इंसान थे। आप अक्सर ख़ामोश रहना पसंद करते थे लेकिन जब बोलते थे तो हमेशा सोच-समझ कर और नाप-तौलकर बोलते थे। किरदार के साफ़-सुथरे और रहम दिल थे। किसी के काम में बेवजह दख़ल नहीं करते। जहाँ ज़रूरत होती, अच्छा मशविरा ज़रूर देते। नेक कामों की हौसला-अफज़ाई करते। कभी किसी से तकलीफ़ पहुँचती तो शिकवा नहीं करते। बड़े सब्र, शुकर और क़नात शख्सियत के मालिक थे। ज़रूरतमंद अहबाब की ख़ामोश और पोशीदा हाथ से लगातार माली मदद करते थे। ख़िलाफ़त से बड़ा गहरा ताल्लुक़ था। ये नियमित ख़त लिखते थे। उनके अपने घर के ताल्लुक़ात भी बड़े ख़ुशगवार थे। घर में बीवी से भी और माता पिता की भी ख़िदमत करने वाले, उनका हक अदा करने वाले थे। बल्कि उनके भाई लिखते हैं कि भाई-बहनों का भी बहुत ख़्याल रखते और बड़े फ़र्ज़ समझकर उनकी ख़िदमत करते।

अगला वर्णन श्रीमान मास्टर मुनिर अहमद साहब झंग का है। उनकी भी पिछले दिनों बयासी (82) साल की उम्र में फ़ातिह हुई है। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना ईलेही राजेऊन। आप भी अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से मूसी थे। उनके पिता मियां गुलाम मोहम्मद साहब ने 1930 में हज़रत खलीफ़तुल मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हो की बैयत की थी। मास्टर साहब पैदाइशी अहमदी थे। खुद्दाम अहमदिया और अंसारुल्लाह में उन्हें चालीस साल सेवा का मौक़ा मिला। क़ायद ज़िला रहे। झंग के नाज़िम ज़िला रहे। फिर चिन्योट ज़िला बना तो वहाँ के भी ये नाज़िम रहे। बड़े मुस्तहक़ और फ़दाई ख़ादिम-ए-सिलसिला थे और नाफ़िअन्नास वजूद थे। बतौर प्राइमरी स्कूल टीचर झंग में मीलाजमत की और हजारों शागिर्द उनके हैं जो उनकी बड़ी इज़्ज़त और इज़्ज़त करते हैं। लोगों के बड़े काम आते रहते थे। सरकारी दफ्तरों में जाने के लिए ये लोगों के ख़ास तौर पर अहमदियों के काम करते और न सिर्फ काम में उनकी मदद करते बल्कि अपने घर लाकर उनकी मेहमान नवाज़ी भी करते। लोगों से ताल्लक का दायर बहुत बड़ा था और इन सभी ताल्लुकी को जमाअत और अहबाब जमाअत की ख़िदमत के लिए इस्तेमाल करते थे, ये नहीं कि ज़ाती फ़ायदा उठाया। असीरान, चाहे वह जमाअती असीरान हों या गैर जमाअती, उनकी बहबूद और ख़िदमत के लिए कमरबस्ते रहते। जेल ख़ानों के अहलकारों से आपके ज़ाती रसूमात थे, जिनसे आप जमाअती असीरान की बहबूद का काम लेते थे। जेलों में सहूलतें फ़राहम करने के हवाले से आपके बड़े राबिते थे। जब हम, मैं और मेरे साथी जेल में थे तो उस दौरान हमारी भी बड़ी ख़िदमत की है। और जेलर से ज़ाती ताल्लुकात की वजह से कुछ बड़ी सहूलतें भी हमें मुहैया कर दी, जो आम क़ैदियों को नहीं मिलतीं। और अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से ये नहीं है कि उन्होंने किसी ख़ास आदमी की ख़िदमत करनी है। चाहे वह ग़रीब अहमदी हो या अमीर, हर एक की ख़िदमत के लिए हर समय कमरबस्ते रहते थे और आम तौर पर भी क़ैदियों की बहबूद के लिए काम किया करते थे। क़ादियान के साथ भी आपको बहुत मोहब्बत थी। तकरीबन हर साल आप क़ादियान जाते और वहाँ ड्यूटियों में भी शामिल होते। केंद्रीय नुमाइंदों जब उनके ज़िले में दौरे पर जाते तो वहाँ भी उनके साथ भरपूर तआवुन करते। उन पर एक पम्फलेट बाँटने का एक मुकदमा भी 1988 में क़ायम हुआ था लेकिन बहारहाल बाद में वह ख़ारिज हो गया। अल्लाह तआला मगफिरत और रहम का सुलूक फ़र्माए। दरजात बुलंद फ़र्माए। उनकी औलाद नहीं थी।

★ ★ ★

पृष्ठ12का शेष भाग

तर्बियत सचिव की रिपोर्ट और प्रशिक्षण

तर्बियत के सचिव ने अपनी रिपोर्ट पेश करते हुए बताया कि उन्हें लोगों को मस्जिद लाने के लिए बहुत मेहनत करनी पड़ती है। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "निरंतर मेहनत करनी पड़ेगी। जो नहीं आ रहे हैं, उन्हें रोज़ाना याद दिलाते रहें।"

इसके बाद फोर्ट वर्थ जमाअत के सदर ने हुज़ूर-ए-अनवर का धन्यवाद किया कि उनकी उपस्थिति से आज यह विशेष दिन देखने को मिला। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "धन्यवाद तब होगा जब आप मस्जिद को आबाद करेंगे।" हुज़ूर-ए-अनवर ने पूछा, "मस्जिद के आसपास कितनी दूरी पर कितने अहमदी रहते हैं?" इस पर सदर ने बताया कि मस्जिद से 15 मिनट की दूरी तक %40-30 अहमदी आबादी रहती है।

हुज़ूर-ए-अनवर ने निर्देश देते हुए कहा, "फज्र और मगरीब-अशा की नमाज़ में कम से कम 50 फ़ीसद की हाजिरी होनी चाहिए, और यह न्यूनतम लक्ष्य रखें, इसे बढ़ाते चलें। वैसे तो 100 फीसद हाजिरी होनी चाहिए।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "पेट्रोल मस्जिद आने के लिए रखें और बाकी अपनी खरीदारी के लिए पैदल जाएं।"

महिलाओं के प्रश्न

महिलाओं की तरफ से एक विदेशी महिला ने प्रश्न किया कि महिलाओं के विशेष दिनों में नमाज़ और क़ुरआन की तिलावत के बारे में क्या हुक्म है? इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "यह सीमित दिन होते हैं, इनमें नमाज़ नहीं पढ़ी जाती और न ही क़ुरआन की तिलावत की जाती है। लेकिन आप अल्लाह का वर्णन कर सकती हैं, दुआएं कर सकती हैं, हदीस में दुआएं बताई गई हैं, आप वह कर सकती हैं। आप अल्लाह को याद रख सकती हैं।"

महिलाओं की तर्बियत और लजना की भूमिका

हुज़ूर-ए-अनवर ने सदर लजना से पूछा कि यहाँ कितनी महिलाएँ हैं। उन्होंने बताया कि यहाँ 70 महिलाएँ हैं, जिनमें से अधिकतर सक्रिय और गतिशील हैं, जबकि कुछ भाग सक्रिय नहीं हैं।

इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "आप महिलाओं के तर्बियत का कार्यक्रम ऐसा बनाएं कि वे अपने बच्चों की तर्बियत कर सकें।" हुज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "अगर लजना की अमला सक्रिय हो जाए, तो मस्जिद में आने वालों की संख्या बढ़ सकती है। अपने पुरुषों को मस्जिद भेजें। इसी तरह स्थानीय जमाअत की अमला, खिदमतगार, अंसार की अमला सक्रिय हों और नियमित रूप से नमाज में शामिल हों, तो मस्जिद की हाजिरी बहुत बढ़ जाएगी।"

इसके बाद स्थानीय जमाअत की अमला ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सौभाग्य पाया। खिदमतगारों और अंसार की अमला ने भी हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सम्मान प्राप्त किया।

फराज़ अहमद की सेवा

एक मित्र, फराज़ अहमद साहब ने मस्जिद और इस परिसर की मरम्मत में बहुत महत्वपूर्ण सेवाएँ अदा की हैं, और उन्होंने यह सारा काम स्वैच्छिक रूप से किया है। उन्हें भी हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीर खिंचवाने का सम्मान प्राप्त हुआ।

यह कार्यक्रम 7:50 पर समाप्त हुआ। इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर कुछ देर के लिए लजना हॉल में तशरीफ ले गए, जहाँ महिलाओं ने उनके दीदार का सौभाग्य प्राप्त किया।

नमाज़ और वापसी

शाम 8 बजे, हुज़ूर-ए-अनवर ने मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम में मगरीब और ईशा की नमाज़ एक साथ अदा कीं। नमाज़ों के बाद, यहाँ से डलास लौटने का कार्यक्रम था।

"मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम" और इस पूरे परिसर को रंग-बिरंगी रोशनी से सजाया गया था। दृश्य बहुत ही खूबसूरत था। इन रोशनियों की वजह से मस्जिद और आसपास का सारा इलाका रोशन था और चारों ओर खुशी का माहौल था।

रात 8:20 पर यहाँ से डलास के लिए रवाना हुए। पुलिस की गाड़ियों ने काफिले को एस्कॉर्ट किया और जगह-जगह दूसरी गाड़ियों को रोककर रास्ता साफ़ किया।

करीब एक घंटे की यात्रा के बाद, रात 9:25 पर हुज़ूर-ए-अनवर की मस्जिद बैत-उल-इकराम, डलास में वापसी हुई। मस्जिद के बाहरी परिसर में जमाअत के पुरुष और महिलाएँ उनके इंतज़ार में खड़े थे। सभी ने हाथ हिलाकर हुज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया।

इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए। शेष ...

★ ★ ★

क़ुरआन करीम के निस्फ़ में जो وَلۡيَتَلَطَّفۡ का शब्द आया है, इस शब्द के क़ुरआन करीम के दरमियान में आने में कुछ खास हिकमत है?

जुमे की नमाज़ में क़नुत के मुतालिक़ हुज़ूर अनवर की रहनमाई

लोंडियों से जस्मानी फ़ायदा उठाने और भी सूद के मुतालिक़ हुज़ूर अनवर की रहनमाई

क्या किसी ऐसे ईसाई, हिंदू या बौद्ध धर्म से ताल्लुक़ रखने वाले दोस्त देहांत पर उसके लिए दुआ की जा सकती है जो जमाअत अहमदिया के लिए अच्छे और प्यार के जज़्बात रखता था?

हम जब मज़हबी और रूहानी लिहाज़ से "दिल" की बात करते हैं तो क्या इससे मुराद वही अंग होता है जो ख़ून की गश्त का काम करता है या फिर इससे मुराद रूह और दिमाग होता है?

सय्यदना हज़रत अमीरुल मौमेनीन ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से पूछे जाने वाले अहम प्रश्नों के उत्तर (क़िस्त 32)

प्रश्न: एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में तहरीर किया कि क़ुरआन करीम के निस्फ़ में जो وَلۡيَتَلَطَّفۡ का शब्द आया है, इस शब्द के क़ुरआन करीम के मध्य में आने में कुछ खास हिकमत है? हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 12 फ़रवरी 2021 में इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर अता फ़रमाया:

उत्तर: अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम को आयात और सूरः की शक्ल में नाज़िल फ़रमाया और आहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने ख़ुदा तआला से राहनुमाई पा कर इसकी मौजूदा तर्तीब को क़ायम फ़रमाया है। आहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम के बाद मुख़्तलिफ़ वक़्तों में क़ुरआन करीम की जो तकीसीम की गई है, ये सब ज़ौकी बातें हैं। इससे क़ुरआन करीम में पाई जाने वाली दाईमी तालीमात और इसके अदीक़ दर अदीक़ रूहानी मा'आरिफ़ पर कोई फ़र्क़ नहीं पड़ता।

क़ुरआनी तालीमात का बुनियादी उद्देश्य ख़ुदा तआला की तौहीद का परचार है। इस एतबार से जब हम क़ुरआन करीम पर गौर करते हैं तो हमें ये बात वाज़ेह तौर पर नज़र आती है कि क़ुरआन करीम की इब्तिदा में भी अल्लाह तआला की तौहीद के मज़मून को वर्णन किया गया और क़ुरआन करीम का अंत भी इसी तौहीद बारी तआला के मज़मून पर हो रहा है और क़ुरआन करीम के दरमियान में जो सूरः आई है अर्थात सूरः अल्कहफ़ वह भी विशेषता तौहीद के ही मज़मून पर मुश्तमिल है और फिर ख़ुद इस सूरः का आग़ाज़ और इख़्तेमाम भी तौहीद ही के मज़मून पर होता है।

बस क़ुरआन करीम की इस तर्तीब में ये हिकमत नज़र आती है कि अल्लाह तआला ने क़ुरआन करीम में जगा जगा तौहीद की तालीम को वर्णन फ़रमा कर इंसान को यह पैग़ाम दिया है कि उसकी कामयाबी का राज़ इसी में है कि वो अल्लाह तआला की तौहीद को अपना ओढ़ना बिछौना बना कर इस आरज़ी ज़िंदगी को गुज़ारे ताकि आख़िरती और दाईमी ज़िंदगी में वो ख़ुदा तआला के लामतनाही फज़्लों का वारीस बन सके।

प्रश्न: एक दोस्त ने हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा है कि मैं अपनी जमाअत में इमाम अस्सलात हूँ। जुमे की नमाज़ में क़नुत पढ़ना चाहता हूँ क्योंकि आजकल वबा के दिन हैं और अहमदियों पर कुछ मुल्कों में ज़ुल्म भी हो रहा है। लेकिन कुछ दोस्तों को इस पर एतराज़ है। इस बारे में इजाज़त और रहनुमाई की दरख़्वास्त है। हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 12 फरवरी 2021 में इस बारे में निम्नलिखित हिदायतें फ़रमाईं:

उत्तर: आहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इमाम अस्सलात के लिए एक निहायत ज़रूरी नसीहत ये फ़रमाई है कि

إِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ لِلنَّاسِ فَلْيُخَفِّفْ فَإِنَّ مِنْهُمُ الضَّعِيفَ وَالسَّقِيمَ وَالْكَبِيرَ وَإِذَا صَلَّى أَحَدُكُمْ لِنَفْسِهِ فَلْيُطَوِّلْ مَا شَاءَ ۔

(सही बुखारी किताब अल् अज़ान)

अर्थात : जब कोई शख़्स लोगों को नमाज़ पढ़ाए तो उसे हल्की नमाज़ पढ़ानी चाहिए क्योंकि मुक्तदियों में कमज़ोर और बीमार और बूढ़े सब ही होते हैं। और जब तुम में से कोई अकेला अपनी नमाज़ पढ़े तो वह जिस क़दर चाहे उसे लंबा करे।

जहां तक नमाज़ों में क़नूत करने का मामला है तो अहादीस से पता चलता है कि आहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने मुसलमानों पर किसी मुसीबत के वार्ड होने पर भी कुछ वक्त के लिए क़नूत के तरीक़ को इख़्तियार फ़रमाया। इसलिए रजिआ और बेएरे मौउना के अवसर पर दुश्मनों इस्लाम की तरफ से बदअहदी और धोखा देने के साथ सहाबा की एक बड़ी जमाअत की शहादत पर हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने इन मुख़ालिफ़ क़बायल के ख़िलाफ़ तीस रोज़ तक क़नूत फ़रमाया और इन क़बायल के ख़िलाफ़ बददुआ की। (सही बुखारी किताब अल्मगाज़ी)

तथा इसके अतिरिक्त हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम ने सहाबा को वित्र की नमाज़ में क़नूत करने का भी तरीक़ सिखाया और इसके लिए मुख्तलिफ़ दुआएं भी सहाबा को सिखाईं।

(सुनन अबी दाऊद किताब अस्सलात بَابُ الْقُنُوتِ فِي الْوِتْرِ)

बस क़नूत का एक तरीक़ वह है जो नमाज़ वित्र में इख़्तियार किया जाता है और एक क़नूत खास हालात में जैसे दुश्मन की तरफ से किसी तकलीफ़ के पहुंचने पर या किसी वबा इत्यादि के फैलने पर इख़्तियार किया जाता है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के दौरे में अल्लाह तआला की तरफ से दी जाने वाली पेशख़बर के मुताबिक जब पंजाब में तावून फैली तो हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने आहुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की इसी सुन्नत की इत्तिबा में फ़रमाया कि "आजकल चूंकि वबा का ज़ोर है इस लिए नमाज़ों में क़नुत पढ़ना चाहिए।"

(अल् बदर नंबर 15, भाग 2, तिथि एक मई 1903, पृष्ठ 115)

तथा फ़रमाया कि "चाहिए कि हर एक शख़्स तहज्जुद में उठने की कोशिश करे और पाँच वक़्त की नमाज़ों में भी क़नूत मिलाएं।"

(मल्फ़ूज़ात भाग प्रथम पृष्ठ 192, मत्तबुका 2016)

इसके अतिरिक्त हज़रत अलैहिस्सलाम ने क़नूत में पढ़ी जाने वाली दुआओं के मुतालिक़ भी रहनुमाई फ़रमाते हुए हिदायत दी कि इस में अदिया मासूरा जो क़ुरआन और हदीस में आई हैं वही पढ़ी जाएं।

(अख़बार बदर नंबर 31, भाग 6, तिथि एक अगस्त 1907, पृष्ठ 12)

क़नूत के बारे में ये बात भी याद रखनी चाहिए कि एक तो इसे मुख्तलिफ़ नमाज़ों में पढ़ना मस्नून है, फर्ज़ नहीं। इस लिए इसे पढ़ना लाज़मी क़रार नहीं दिया जा सकता। तथा हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशाद की रोशनी में क़नूत के नमाज़ों में पढ़ने की रिवायत तो मिलती हैं लेकिन नमाज़ जुमे में पढ़ने की कोई रिवायत कहीं नहीं मिलती। इस लिए ऐसी नेकीयों को जिन में दूसरे लोग भी शामिल हो रहे हों इसी हद तक बजा लाना चाहिए जिस हद तक शरियत ने इसकी इजाज़त दी है। ताकि किसी को भी तकलीफ़ मालायुताका का सामना न करना पड़े।

प्रश्न: एक दोस्त ने दासियों से शारीरिक लाभ उठाने और सूद के बारे में हज़रत खलीफ़ा मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह और हज़रत मलिक सैफ़-उर-रहमान साहब के मत का वर्णन करके हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से इस बारे में मार्गदर्शन चाहा। जिस परहज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 15 फ़रवरी 2021 में इस बारे में नीचे दिए गए वर्णन किए।

उत्तर : इस्लाम के शुरुआती दौर में दुश्मनों के ज़ुल्मों के उत्तर में इस्लामी जंगों की इजाज़त के नतीजे में जब दुश्मनों की औरतें भी दासियों की शक्ल में मुसलमानों के कब्जे में आईं तो सूरः निसा की कुछ आयात की रोशनी में मेरा यह मानना है कि इन दासियों के साथ निकाह के ज़रिए ही रिश्ते पति-पत्नि स्थापित हो सकते थे, हालांकि इस निकाह के लिए इन दासियों की रज़ामंदी ज़रूरी नहीं थी और न ही दासी से निकाह के नतीजे में मर्द के लिए चार शादियों तक की इजाज़त पर कोई फर्क पड़ता था।

ऐसी दासियों के मसले पर आपने जो अपने मत का वर्णन किया है, तो जैसा कि मैंने अपने पहले उत्तर में जो बुनियादी मुद्दों के उत्तरों की क़िस्त नंबर 4 और 5 में प्रकाशित हो चुका है लिखा है कि इस मसले पर अलग-अलग राय मौजूद हैं और हज़रत खलीफ़ा मसीह चतुर्थ रहमहुल्लाह का भी यही मानना था कि इन दासियों से रिश्तों के लिए निकाह की ज़रूरत नहीं जबकि हज़रत खलीफ़ा मसीह द्वितीय रज़ियल्लाहु अन्हु से दोनों तरह के मत साबित हैं।

बहरहाल, निकाह होता था या नहीं होता था, तरीका जो भी था, लेकिन इस बात पर सब एकमत हैं कि अगर इस दासी के हां औलाद हो जाती थी तो मालिक की ज़िंदगी में उसे 'उम्मुल वलद' का दर्जा मिल जाता था, अर्थात मालिक न तो इस दासी को बेच सकता था, न किसी और को उपहार दे सकता था और मालिक की मौत के बाद ऐसी औरत को आज़ादी के पूरे हक़ मिल जाते थे और वह पूरी तरह से आज़ाद हो जाती थी।

बाकी जहां तक सूद का मामला है तो अल्लाह तआला के फ़ज़्ल से जमाअत अहमदिया क़ुरआन और हदीस और हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के इरशादात की रोशनी में हर ज़माने में खलीफ़ा-ए-वक्त की निगरानी में उलमा-ए-जमाअत अहमदिया के ज़रिए इस मुद्दे के विभिन्न पहलुओं के बारे में गौर करने के बाद अपना मत वर्णन करती रही है। और इस वक्त भी सूद से संबंधित कई मामलों पर जमाअत गौर कर रही है।

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत ए अज़ीज़ में लिखा कि क्या मैं अपने किसी ऐसे ईसाई, हिंदू या बौद्ध धर्म से संबंध रखने वाले दोस्त की मौत पर उसके लिए दुआ कर सकता हूं जो जमाअत अहमदिया के लिए अच्छे और प्यार के जज़्बात रखता था? हज़रत अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र तिथि 15 फरवरी 2021 में इस प्रश्न का नीचे दिया गया उत्तर दिया।

उत्तर: जैसा कि मैंने पहले भी आपको लिखा था कि इस्लाम हमें किसी इंसान से नफरत नहीं सिखाता बल्कि सिर्फ उसके बुरे कार्य से बेज़ारी की तालीम देता है। और जहां तक किसी के जन्नत या जहन्नम में जाने का मामला है तो इसे अल्लाह तआला ने अपने हाथ में रखा है और किसी दूसरे इंसान को यह इख़्तियार नहीं दिया कि वह इस दुनिया में बैठकर किसी इंसान के जन्नती या जहन्नमी होने का फैसला करे। हां, यह बात सही है कि अल्लाह तआला कभी-कभी अपने नबियों और रसूलों को किसी व्यक्ति के जन्नती या जहन्नमी होने का इल्म दे देता है। लेकिन उस व्यक्ति के जन्नती या जहन्नमी होने का फैसला सिर्फ अल्लाह तआला ही करता है। चूंकि अल्लाह तआला क़ुरआन में इस मुद्दे को वर्णन करते हुए फ़रमाता है कि "यकीनन जो लोग (मुहम्मद रसूलुल्लाह पर) ईमान लाए और वह लोग जो यहूदी बन गए और साबी और नसरानी और माजूसी और वह लोग भी जिन्होंने शिर्क किया। अल्लाह यकीनन उनके बीच कयामत के दिन फैसला कर देगा। अल्लाह यकीनन हर एक चीज़ का निगरान है।" (अल् हज: 18)

फिर अल्लाह तआला ने क़ुरआन में इस मुद्दे को भी वर्णन किया कि अल्लाह तआला किसी भी इंसान के नेक काम को ज़ाया नहीं करता चाहे वह इंसान किसी भी मज़हब से संबंध रखता हो। चूंकि अल्लाह तआला फ़रमाता है कि "जो लोग ईमान लाए हैं और जो यहूदी हैं, निस्संदेह नसरानी और साबी (उनमें से) जो (पार्टी) भी अल्लाह पर और आख़िरत के दिन पर (कामिल) ईमान लाया है और उसने नेक कार्य किए हैं यकीनन उनके लिए उनके रब के पास उनका (मुनासिब) अज्र है।" (अल् बकरः : 63)

इसलिए किसी की मौत पर अफ़सोस का इज़हार करने, इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैह राजिऊन की दुआ पढ़ने और अल्लाह तआला का रहम मांगने में कोई हरज नहीं है। इन्ना लिल्लाह व इन्ना इलैह राजिऊन पढ़ने से तो खुद पढ़ने वाले के लिए भी दुआ हो जाती है। क्योंकि किसी तकलीफ़ या नुकसान के पहुंचने पर अल्लाह तआला ने हमें यह दुआ पढ़ने की तलीम दी है। और इस दुआ से उद्देश्य यह होती है कि हे अल्लाह तू इस तकलीफ़ को दूर फ़रमा दे या इस नुकसान को पूरा फ़रमा दे। और जब किसी की मौत पर हम यह दुआ करते हैं तो इससे एक उद्देश्य यह भी हो सकता है कि हे अल्लाह इस इंसान के साथ जो मेरी उम्मीदें जुड़ी थीं, उसके मरने के बाद तू उन उम्मीदों को पूरा फ़रमा दे।

अल्लाह तआला का रहम भी इंसान किसी के लिए भी मांग सकता है, क्योंकि रहम करना भी अल्लाह तआला के इख़्तियार में है और वही बेहतर जानता है कि उसने किस इंसान पर किस वक्त रहम करना है। चूंकि हदीस में आता है कि एक समय ऐसा आएगा कि अल्लाह तआला के रहम के नतीजे में जहन्नम बिल्कुल खाली हो जाएगा। (तफ़सीर-ए-तबरी, तफ़सीर सूरः हूद आयत नंबर : 108)

प्रश्न: एक दोस्त ने हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की खिदमत में लिखा कि जब हम धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से "दिल" की बात करते हैं, तो क्या इसका अर्थ वही अंग होता है जो खून की धारा का काम करता है या फिर इसका तात्पर्य आत्मा और मस्तिष्क से होता है? हज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने अपने पत्र दिनांक 19 फ़रवरी 2021 को इस प्रश्न का निम्नलिखित उत्तर दिया :

उत्तर: अरबी भाषा में आम तौर पर दिल के लिए "कलब" और "फ़ूआद" के शब्द आते हैं और ये दोनों शब्द क़ुरआन करीम में बाहरी अर्थों में भी उपयोग किए गए हैं और अर्थ की रंग में भी आए हैं। जैसे दिल पर पर्दा पड़ जाना, दिल में टेढ़ापन होना, दिल का कठोर हो जाना, दिल का ईमान न लाना, दिल में रोग पैदा हो जाना, दिल पर मोहर लग जाना, दिल पर ज़ंग लग जाना, दिल का इनकार करना, दिल में ग़ैज़ होना, दिल का संदेह करना, दिल का अंधा होना, दिल का गले तक आ जाना, दिल का फिर जाना, दिल का न समझना, दिल का भलाई और बुराई कमा लेना, दिल का अल्लाह के वर्णन से गाफिल होना, दिल का पाक होना, दिल का इत्मिनान पाना, दिल में तकवा होना, दिल का मज़बूत होना, दिल का इरादा करना, दिल में ईमान का प्रवेश करना, दिल पर अल्लाह तआला का कलाम नाज़िल होना, दिल का फ़िक्र से फुरसत पाना और दिल का देखना आदि। इसी प्रकार हदीस में भी दिल को बाहरी अर्थों के अलावा अर्थ के रूप में भी उपयोग किया गया है।

इसलिए क़ुरआन और हदीस में इस शब्द के विभिन्न अर्थों का उपयोग बताता है कि धार्मिक और आध्यात्मिक भाषा में दिल से तात्पर्य केवल एक शारीरिक अंग नहीं है जो खून की धारा का काम करता है, बल्कि धार्मिक और आध्यात्मिक भाषा में इस शब्द को अर्थ के रूप में भी कई अर्थों में इस्तेमाल किया गया है। और इसका तात्पर्य आत्मा, ज्ञान, समझ, बुद्धि, नीयत, स्वभाव, साहस और फ़ितरत आदि कई तात्पर्य होते हैं। चूंकि हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्ह ने क़लब और फूआद की शाब्दिक तफ्सीर के संदर्भ में फ़रमाया: "कलब के अर्थ हैं अल् फ़ुआद। दिल... और कभी-कभी क़लब का शब्द बुद्धि पर भी बोला जाता है... और शब्द क़लब के द्वारा उन कीफियतों को वर्णन किया जाता है जो आत्मा, ज्ञान और साहस आदि की इस के साथ विशेष हैं... क़लब के अर्थ सोचने और तदब्बुर के हैं।"

(तफ्सीर-ए-कबीरी, खंड 1, पृष्ठ 153)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "दिल में ईमान के लिखने से यह तात्पर्य है कि ईमान फ़ितरी और तबई इरादों में दाखिल हो गया और फितरत

का अंग बन गया और कोई तकलुफ़ और अंतर नहीं रहा। और यह मरतबा कि ईमान दिल के रग व रेशे में दाखिल हो जाए, उस समय इंसान को मिलता है कि जब इंसान रूहुल कुदस से मोअइद होकर एक नई ज़िंदगी पाए और जिस तरह जान हर वक्त शरीर की हिफ़ाज़त के लिए शरीर के अंदर रहती है और अपनी रोशनी उस पर डालती रहती है, इसी तरह इस नई ज़िंदगी की रूहुल् कुदुस भी अंदर आबाद हो जाए और दिल पर हर वक्त और हर लम्हा अपनी रोशनी डालती रहे। और जैसे शरीर जान के साथ हर वक्त ज़िंदा है, दिल और समस्त रूहानी अंग रूहुल कुदुस के साथ ज़िंदा हों, इसी वजह से ख़ुदा तआला ने बाद वर्णन करने इस बात के कि हमने उनके दिलों में ईमान को लिख दिया, यह भी वर्णन फ़रमाया कि रूहुल कुदुस से हमने इन्हें तआइद दी। क्योंकि जबकि ईमान दिलों में लिखा गया और फ़ितरी हुरूफ में दाखिल हो गया, तो एक नई पैदाइश इंसान को हासिल हो गई और यह नई पैदाइश बग़ैर रूहुल कुदुस के सहायता के हरगिज़ नहीं मिल सकती। रूहुल कुदुस का नाम इसी लिए रूहुल कुदुस है कि उसके दाखिल होने से एक पाक रूह इंसान को मिल जाती है। क़ुरआन करीम रूहानी हयात के वर्णन से भरा पड़ा है और जाबजा कामिल मोमिनों का नाम अहिया अर्थात ज़िंदा और काफ़िरों का नाम अम्वात अर्थात मरे रखता है। यह इसी बात की ओर इशारा है कि कामिल मोमिनों को रूहुल कुदुस के दख़ूल से एक जान मिल जाती है और काफ़िर, गो शारीरिक तौर पर हयात रखते हैं, परंतु उस हयात से बेनसीब हैं जो दिल और दिमाग को ईमानी ज़िंदगी बख़्शती है।"

(आईना कमालात-ए-इस्लाम, रूहानी खज़ायन खंड 5 पृष्ठ 100 से 102)

हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "क़ुरआन शरीफ में जो خَتَمَ اللّٰهُ عَلٰى قُلُوۡبِهِمۡ आया है, इसमें ख़ुदा के मोहर लगाने के यही अर्थ हैं कि जब इंसान बदी करता है, तो बदी का नतीजा असर के तौर पर उसके दिल पर और मुँह पर ख़ुदा तआला ज़ाहिर कर देता है और यही अर्थ इस आयत के हैं कि فَلَمَّا زَاغُوۡا اَزَاغَ اللّٰهُ قُلُوۡبَهُمۡ अर्थात जब वे हक से फिर गए तो ख़ुदा तआला ने उनके दिल को हक की मनासबत से दूर डाल दिया। और आखिर को मआनिदाना जोश के असर से एक अजीब काया पलट उनमें ज़हूर में आई और ऐसे बिगड़े कि गोया वे वे न रहे और रफ्ता-रफ्ता नफसानी मुखालफत के ज़हर ने उनके अनवार-ए-फ़ितरत को दबा लिया।"

(किताब अल्बरियह, रूहानी खज़ायन खंड 13, पृष्ठ 48 ,47)

اَلَا بِذِكۡرِ اللّٰهِ تَطۡمَئِنُّ الۡقُلُوۡبُ के संबंध में हुज़ूर अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं: "इसके आम अर्थ तो यही हैं कि अल्लाह तआला के वर्णन से दिल इत्मिनान पाते हैं, लेकिन इसकी हक़ीक़त और फ़लसफ़ा यह है कि जब इंसान सच्चे इख़लास और पूरी वफ़ादारी के साथ अल्लाह तआला को याद करता है और हर वक्त अपने आपको उसके सामने यक़ीन करता है, उससे उसके दिल पर एक ख़ौफ़ अज़मत-ए-इलाही पैदा होता है। वह ख़ौफ़ उसे मक़रूहात और मनहियात से बचाता है और इंसान तकवा और तहारत में तरक्क़ी करता है यहाँ तक कि अल्लाह तआला के मालेका इस पर नाज़िल होते हैं और वह उसे बशारते देते हैं और इल्हाम का दरवाज़ा इस पर खुला जाता है। उस समय वह अल्लाह तआला को गोया देख लेता है और उसकी वरा उल् वरा ताक़तों को मुआशिदा करता है। फिर उसके दिल पर कोई ग़म और ख़म नहीं आ सकता और तबियत हमेशा एक नशात और ख़ुशी में रहती है।"

(अल् हकम खंड 9 नंबर 32, दिनांक 10 सितंबर 1905, पृष्ठ 8)

فِيۡ قُلُوۡبِهِمۡ مَّرَضٌ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا की तफसीर करते हुए हज़रत मुस्लेह मौऊद रज़ियल्लाहु अन्ह फ़रमाते हैं: "इस आयत में बताया गया है कि उनका फ़ितरत सहीह पर काम न करना बताता है कि उनके दिल मरीज़ हैं। क्योंकि अगर दिल में मरज़ न होता तो कम से कम ये उन बातों को तो महसूस करते जो फ़ितरत सहीह से पैदा होती हैं। जिस तरह सफ़र की ज़्यादती से ज़बान का मज़ा खराब हो जाता है और मीठा भी कड़वा मालूम देता है, उसी तरह जिनके दिल मरीज़ हों, वे अपनी फ़ितरत की आवाज़ को सही तौर पर नहीं सुन सकते।"

(तफ़्सीर-ए-कबीर, खंड 1, पृष्ठ 173)

इसलिए क़ुरआन और हदीस तथा उपरोक्त निर्देशों से यह साबित होता है कि धार्मिक और आध्यात्मिक रूप से "दिल" से तात्पर्य केवल एक शारीरिक अंग नहीं है, बल्कि इस शब्द का उपयोग अर्थ के रूप में भी कई मायनों में किया जाता है।

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

कुत्ते को अगर किसी चोर के कपड़े की महक दी जाए, तो वह चाहे कितनी भी दूर क्यों न हो, उसे पकड़ लेता है। उसी तरह शैतान भी तक़्दुस (पवित्रता) की महक से नफरत करता है और उस पर हमला करता है।

जब हज़रत आदम (अलैहिस्सलाम) ने अल्लाह से पवित्रता की महक पाई, तो शैतान उनके पीछे पड़ा। फिर हज़रत नूह (अलैहिस्सलाम), हज़रत इब्राहीम (अलैहिस्सलाम), हज़रत राम, हज़रत कृष्ण, हज़रत ज़रतश, हज़रत ईसा (अलैहिस्सलाम) और हज़रत मुहम्मद रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम) के ज़माने में भी शैतान ने उन पर हमले किए। क्योंकि इन सभी में एक ही तरह की पवित्रता की महक थी, जो तौहीद (अल्लाह की एकता) की महक थी, इसलिए शैतान ने एक ही तरह से हमले किए।

परंतु अल्लाह फ़रमाता है: فَيَنۡسَخُ اللّٰهُ مَا يُلۡقِى الشَّيۡطٰنُ ثُمَّ يُحۡكِمُ اللّٰهُ اٰيٰتِهٖ وَاللّٰهُ عَلِيۡمٌ حَكِيۡمٌ "फयन्सख़ुल्लाहु मा युल्किश्शैतानु सुम्मा युह्किमुल्लाहु आयातिहि वल्लाहु अलीमुन हकीम" (अल्लाह तआला शैतान की समस्त रुकावटों को मिटा देता है और अपनी आयतों को क़ायम कर देता है, और अल्लाह बड़ा जानने वाला और हिकमत वाला है)।

(तफ़्सीर-ए-कबीर, भाग 6, पृष्ठ 71, मुद्रित 2010, क़ादियान)

★ ★ ★

पृष्ठ 1 का शेष भाग

ताक़त और हिम्मत पाता है, तो उसे "काफ़िर" और "दज्जाल" कहा जाता है। मैं कहता हूँ कि अगर ये लोग ईमान का नतीजा यक़ीन नहीं कर सकते, तो कम से कम इसे फर्ज़ ही मान लें। फर्ज़ से भी बड़े-बड़े नतीजे निकल आते हैं। देखो, युक्लिड (अक्लीदस) का पूरा आधार फर्ज़ पर है, और इससे कितने फायदे मिलते हैं। बड़े-बड़े इल्म की बुनियाद भी पहले फर्ज़ पर ही होती है। इसलिए अगर ईमान को भी फर्ज़ मानकर ही अपना लेते, तो यकीन है कि वे ख़ाली हाथ न रहते। परंतु यहाँ तो अब यह हाल हो गया है कि लोग इसे एक बे-मानी चीज़ समझते हैं।

(मल्फ़ूज़ात, भाग 2, पृष्ठ 41, एडिशन 2018, क़ादियान)

★ ★ ★

अख़बार बदर के अंकों की रक्षा करें

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ज़माने की यादगार अख़बार “अख़बार बदर” 1952 ई.से लगातार क़ादियान दारुल अमान से मुद्रित हो रहा है, और जमअत की दीनी ज़रूरतों को पूरा कर रहा है। इस में क़ुरआन-ए-क़रीम की आयात, आँहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम की हदीसे, हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मलफ़ूज़ात और लेखनी के इलावा सय्यदना हुज़ूर अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के ताज़ा ख़ुत्बात जुमा और खिताबात, अध्याम्पूर्ण संदेश, ख़ुत्बा जुमा प्रश्न उत्तर के रूप में और हुज़ूर के दौराजात की निहायत ईमान अफ़रोज़ और दीनी और दुनियावी इल्म के ख़ज़ानों से भरपूर रिपोर्टस प्रकाशित होती हैं। इनका अध्यन करना, उनको दूसरों तक पहुंचाना, इन पर कर्म करना और उनके माध्यम से अपनी और अपने बच्चों की शिक्षा और तर्बीयत करना हम सब का फ़र्ज़ है। इन समस्त उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए अख़बार बदर के शुमारों को हिफ़ाज़त के साथ अपने पास सुरक्षित रखना हम सब की महत्वपूर्ण ज़िम्मेदारी है।

दीनी शिक्षा और तर्बीयत पर आधारित यह मुक़द्दस अख़बार तक़ाज़ा करता है कि इसका सम्मान किया जाए। इसलिए उसको रद्दी में बेचना यह सम्मान का उल्लंघन करने के समान है। यदि इस को सँभालना मुम्किन न हो तो सावधानी के साथ इस को नष्ट करें ताकि इन पवित्र लेखनियों का अपमान न हो। उम्मीद है कि जमआत इस तरफ़ विशेष ध्यान फ़रमाएँ गी और इस से भरपूर लाभ प्राप्त करते हुए इन विषयों को समक्ष रखेंगे। (संस्थान)

★ ★ ★

इस्लाम और सय्यदना हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के मुख़ालिफ़ अलेक्जेंडर डोवी के शहर ज़ायन (zion) से शुरू होने वाली हज़रत ख़लीफ़तुल मसीह ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ की ग़ैरमामूली अहमयित और बरकतों की हामिल ऐतिहासिक अमरीका की यात्रा सितंबर, अक्तूबर 2022 ई.

पोप तक रसाई आसान नहीं है, जबकि हुज़ूर से मिलना आसान है। हर एक अहमदी हुज़ूर से मिल सकता है।"

हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर एक इलाही नूर है, जिसे आप टीवी पर नहीं देख सकते। आप इस नूर को सिर्फ खुद महसूस कर सकते हैं

"मैंने हुज़ूर से पूछा कि मैं खुदा के बारे में अपने शक को कैसे दूर करूं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: दिल से अल्लाह तआला से दुआ करें और अल्लाह से उसके वजूद को ज़ाहिर करने की दुआ करें।"

जैसे ही मैं हुज़ूर-ए-अनवर के दफ्तर गई, तो सिर्फ हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे को ही देखती रही कि कितना नूरानी (प्रकाशमय) चेहरा है

एक जवान, सलमान दाऊद मुनिर साहब, ह्यूस्टन से आए थे। उन्होंने कहा, "पंद्रह साल बाद हमारी मुलाकात हुई है। हुज़ूर-ए-अनवर ने इज़राहे शफ्कत हमारे खानदान के हर एक फर्द से बात की। मैं पिछले तीन साल से ह्यूस्टन का कायद खुद्दामुल् अहमदिया हूं। मैंने ह्यूस्टन के खदमात के लिए दुआ की दरख्वास्त की। मुझे अपनी आंखों में कोई मसला दरपेश है। इसके लिए मैंने हुज़ूर से दुआ की दरख्वास्त की। अब मुझे दिल में सुकून और इत्मिनान है कि सब ठीक हो जाएगा और मुझे कोई फिक्र करने की ज़रूरत नहीं है।"

ह्यूस्टन से एक दोस्त, कोलबर्न टकर साहब, मुलाकात के लिए आए थे। अपने विचारों का इज़हार करते हुए उन्होंने कहा, "मैं एक कैथोलिक था। मैंने कुछ अरसे पहले अहमदियत क़बूल की है। पोप से मिलना तो बहुत मुश्किल है। पोप तक रसाई आसान नहीं है, जबकि हुज़ूर से मिलना आसान है। हर एक अहमदी हुज़ूर से मिल सकता है।"

फैमिली मुलाकातों के इस प्रोग्राम के बाद, "अहमदिया मेडिकल एसोसिएशन अमेरिका" के उहदेदारों ने हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ से मुलाकात की सआदत पाई। (तफ़सीली रिपोर्ट अल् फ़ज़ल में यहां मलाहिज़ा फ़रमाएं)

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बेतुल इकराम" तशरीफ़ लाकर नमाज़े ज़ुहर व असर जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ों की अदाईगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहैशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

क्लास वाक़फ़ीन-ए-नौ

प्रोग्राम के मुताबिक़ छह बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ मस्जिद बेतुलअकराम के मर्दाने हाल में तशरीफ़ लाए जहां वाक़फ़ीन-ए-नौ की हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ के साथ क्लास हुई।

क्लास वाक़फ़ीन-ए-नौ

इसके बाद सात बजे प्रोग्राम के मुताबिक़ वाक़फ़ीन-ए-नौ की हुज़ूर-ए-अनवर के साथ क्लास शुरू हुई।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ कुछ देर के लिए अपने दफ्तर तशरीफ़ ले गए।

साढ़े आठ बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने "मस्जिद बेतुल इकराम" तशरीफ़ लाकर नमाज़े मगरिब व ईशा जमा करके पढ़ाईं।

नमाज़ों की अदाईगी के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ अपनी रहैशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

दौरा-ए-अमेरिका का ग्यारहवां दिन

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने सुबह 6 बजकर 10 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" तशरीफ लाकर नमाज़-ए-फज्र पढ़ाई। नमाज़ के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर तशरीफ ले गए।

सुबह के समय हुज़ूर-ए-अनवर ने विभिन्न मुल्कों से आई डाक, फैक्स, ईमेल और रिपोर्ट्स का जायजा लिया और उन पर अपने मुबारक हाथों से हिदायतें दीं। यहां अमेरिका से भी रोज़ाना बड़ी तादाद में जमाअत के लोगों के खत मिलते हैं, जिन्हें हुज़ूर-ए-अनवर पढ़ते हैं और उनकी रहनुमाई फ़रमाते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने 1 बजकर 30 मिनट पर "मस्जिद बैतुल इकराम" में ज़ोहर और असर की नमाज़ें जमा करके पढ़ाईं। नमाज़ के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर वापस चले गए।

फैमिली मुलाकातें

कार्यक्रम के अनुसार, शाम 6 बजे हुज़ूर-ए-अनवर अपने दफ्तर तशरीफ लाए और फैमिली मुलाकातों का सिलसिला शुरू हुआ। आज शाम के इस सत्र में 24 फैमिलीज़ और दो ग्रुप, अफगानी और मार्शलीज़, ने मुलाकात का शरफ पाया। मुलाकात करने वालों की कुल संख्या 192 थी।

आज मुलाकात करने वाले यह लोग Dallas की स्थानीय जमाअत के अलावा अमेरिका के विभिन्न शहरों से आए थे जैसे Kentucky, Chicago, Bay Point, Fort Worth, Tulsa, Alabama, Georgia, Los Angeles, Houston, Las Vegas, और Sacramento।

आज भी कुछ फैमिलीज़ और लोग काफी लंबी दूरी तय करके हुज़ूर-ए-अनवर से मिलने पहुंचे थे। Chicago से आए लोग 904 मील, Las Vegas से 1221 मील, Los Angeles से 1433 मील, और Bay Point से आए लोग 1712 मील का लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आका से मिलने पहुंचे थे।

आज पाकिस्तान से आए कुछ लोगों ने भी मुलाकात की

मुलाकात करने वाले सभी लोगों और फैमिलीज़ ने हुज़ूर-ए-अनवर के साथ तस्वीरें खिंचवाने का शरफ पाया। हुज़ूर-ए-अनवर ने प्रेम के साथ पढ़ाई करने वाले बच्चों को कलम और छोटे बच्चों को चॉकलेट इनाम में दी।

जमाअत के लोगों के एहसासात

आज मुलाकात करने वालों में बड़ी तादाद में ऐसे लोग थे, जिन्होंने अपनी जिंदगी में पहली बार हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात की। कितने ही खुशकिस्मत लोग थे, जिन्हें खलीफा-ए-मसीह के नज़दीक होने के कुछ लम्हे नसीब हुए। यह लम्हे उनकी पूरी जिंदगी का सरमाया हैं, और उनके बच्चे भी, जो उनके साथ आए थे, बड़े होकर इन लम्हों को याद करेंगे।

Dallas जमाअत के एक सदस्य, ताहिर वरायच साहब, जब मुलाकात करके बाहर आए, तो उनकी आंखों में आंसू थे। उन्होंने कहा कि मेरे पास शब्द नहीं हैं इसे वर्णन करने के लिए। मुझे जो दिली सुकून मिला है, वह वर्णन नहीं कर सकता। मैंने अपने प्यारे आका से दुआएं मांगी, और मुझे अब और कुछ नहीं चाहिए। मुझे सब कुछ मिल गया है।

एक और दोस्त, अव्वाब मंज़ूर बाजवा साहब ने अपने एहसासात वर्णन करते हुए कहा कि हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे पर एक इलाही नूर है, जिसे आप टीवी पर नहीं देख सकते। आप इस नूर को सिर्फ खुद महसूस कर सकते हैं।

Bay Point जमाअत से एक दोस्त, फ़रीद अहमद, 1712 मील का लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आका से मुलाकात के लिए आए थे। जब उनसे मुलाकात का हाल पूछा गया तो वह रोने लगे और कुछ कह नहीं सके। बस इतना ही कहा कि इस

चेहरे में सच्चाई है, तक़्वा है, और नूर है।

एक और दोस्त, शरीफ ओलेकश अजाला साहब, Dallas जमाअत से आए थे। उन्होंने कहा कि मुझे गर्व है कि मैं अमेरिका आकर अपने खलीफा से मिला हूं। मैं बहुत खुशनसीब हूं। मुझे पता है कि मेरे देश के ज्यादातर लोगों को यह मौका कभी नहीं मिलेगा।

Alabama जमाअत से आए एक दोस्त, हमाद अहमद खान साहब, ने कहा कि मैं बहुत सुकून और खुशी महसूस कर रहा हूं। उनकी बेटी भी साथ थी, जो इस मुलाकात से हैरान थी और एक शब्द भी नहीं बोल सकी। अल्लाह ने कितनी अज़ीम नेअमत दी थी।

जमाअत डलास (Dallas) से एक दोस्त सुलेट ओपे यमी (Suliat Ope Yemi) साहब मुलाकात करके दफ्तर से बाहर आए तो कहने लगे, "मैं क्या कहूं। अल्लाह तआला ने मुझे अपनी जमाअत और खलीफा से इज़्ज़त बख्शी है। हमारे जाने से पहले ही हुज़ूर-ए-अनवर को पता चल गया था कि हम नाइजीरिया से आए हैं और हम योरूबा (Yoruba) हैं। हमने कोई शब्द भी नहीं बोला था, लेकिन हुज़ूर को सब मालूम था। हुज़ूर को यह भी पता था कि हम अफ्रीका में कहां से, किस जगह से हैं।"

एक नौजवान रिज़वान अहमद खान जब मुलाकात करके बाहर आए तो उनकी हालत यह थी कि बात भी नहीं कर पा रहे थे। उनकी आँखों में आँसू थे। उन्होंने कहा, "मैंने हुज़ूर से पूछा कि मैं खुदा के बारे में अपने शक को कैसे दूर करूं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया: दिल से अल्लाह तआला से दुआ करें और अल्लाह से उसके वजूद को ज़ाहिर करने की दुआ करें।"

जमाअत डलास (Dallas) के जरीउल्लाह खान साहब ने अपने एहसासात का इज़्हार करते हुए कहा, "खिलाफत-ए-अहमदिया मेरी ज़िंदगी में अल्लाह की हस्ती का सबसे बड़ा सबूत है। आज की मुलाकात मेरी ज़िंदगी की सबसे बेहतरीन मुलाकात थी। मैं अपने बच्चों के साथ था, और ज़्यादातर बातें मेरे बच्चों ने ही कीं। मैं बस चाहता हूँ कि मेरे बच्चे खिलाफत और खुदा के क़रीब हो जाएं।"

जमाअत केंटकी (Kentucky) से आईं एक महिला, आयशा मुबशर साहिबा, मुलाकात करके बाहर आईं तो रोने लगीं। उन्होंने कहा, "मेरे पास वर्णन करने के लिए शब्द नहीं हैं। हुज़ूर-ए-अनवर ने मेरी फैमिली के बारे में पूछा। मेरे बच्चों के लिए दुआ की। मैं तो सिर्फ दुआएं लेकर आई हूँ।"

जमाअत ह्यूस्टन (Houston) से आए एक दोस्त, शाह ग़ालिब साहब, ने कहा, "मेरी अपने रूहानी पिता से मुलाकात हुई। मुझे और क्या चाहिए। खलीफा-ए-वक़्त की सोहबत से दिल सुकून से भर जाता है और रौशन हो जाता है।"

तूबा मलिक साहिबा, जो डलास (Dallas) से आई थीं, जब बाहर आईं तो उनकी आँखों से आँसू बह रहे थे। उन्होंने कहा, "मेरे पास कोई शब्द नहीं हैं। आज मेरी ज़िंदगी का सबसे खूबसूरत लम्हा है और खुदा तआला के प्यारे बंदे से मेरी मुलाकात हुई।"

नुसरत मलिक साहिबा भी जमाअत डलास से मुलाकात के लिए आई थीं। वह भी रो रही थीं। उन्होंने कहा, "हुज़ूर-ए-अनवर हमारी इस जमाअत से बहुत मोहब्बत करते हैं। इतनी दूर से आकर हमें वक्त दे रहे हैं। हम कितने खुशनसीब हैं।"

अफ़ग़ानिस्तान से आईं महिलाओं और बच्चियों पर आधारित एक ग्रुप ने भी हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात की। मुलाकात के दौरान इन महिलाओं और बच्चियों ने अपनी स्थानीय पश्तो ज़बान में खुशनुमा अंदाज में एक नज़्म पेश की। इस नज़्म का उर्दू अनुवाद निम्नलिखित है:

"हुज़ूर तशरीफ लाए और रौशनी चाँद जैसी हो गई,
हम दिन गिन रहे थे और खुशियों वाले दिन आ गए,
आँखें शम्मा की तरह ईमान और इखलास से भर गईं,
हर एक के लिए दुआ तेज़ बारिश जैसी हो गई,
हम खलीफा के हो गए और खलीफा हमारा हो गया,
ऐसी अपनाइयत हमारी और हमारे आका के दिलों में हो गई।"

आज साउथ पेसिफिक के द्वीपों पर स्थित देश मार्शल आइलैंड्स (Marshall Islands) से संबंधित अहमदी जमाअत के ग्रुप ने भी हुज़ूर-ए-अनवर से मुलाकात का शरफ पाया। इस ग्रुप में सात लोग थे, जिनमें चार पुरुष, दो महिलाएं और एक बच्चा शामिल था।

मार्शल आइलैंड्स की इस कौम से संबंधित यह लोग अरकांसास (Arkansas) राज्य के शहर स्प्रिंगडेल (Springdale) में रहते हैं। यह लोग 330 मील का सफर तय करके मुलाकात के लिए डलास (Dallas) पहुंचे थे।

मुलाकात के बाद इन सभी लोगों ने कहा कि हमारे दिल की धड़कन तेज हो गई थी और हमारे लिए बोलना मुश्किल हो गया था।

एक दोस्त ल्यूक ज़ैकियस (Luke Zackious) साहब ने कहा, "आज की मुलाकात में जो हमें हुज़ूर का क़रीब होना नसीब हुआ, यह मेरे लिए एक खास लम्हा था।"

एक खादिम रोमियो टैनसन (Romeo Tanson) ने कहा, "यह मेरी हुज़ूर-ए-अनवर से दूसरी मुलाकात थी और यह मेरे लिए एक खास याद रहेगी। यह मुलाकात मुझे हमेशा याद रहेगी। जब भी मैं डलास आऊंगा, तो यह मुलाकात खास तौर पर याद आएगी।"

एक महिला, जेनिला जॉन साहिबा ने अपने भाव व्यक्त करते हुए कहा, "जैसे ही मैं हुज़ूर-ए-अनवर के दफ्तर गई, तो सिर्फ हुज़ूर-ए-अनवर के चेहरे को ही देखती रही कि कितना नूरानी (प्रकाशमय) चेहरा है।"

मुलाकातों का यह कार्यक्रम साढ़े आठ बजे तक जारी रहा। इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने मस्जिद बैत-उल-इकराम में तशरीफ़ लाकर मग़रिब और इशा की नमाज़ें एक साथ अदा कराईं। नमाज़ों की अदायगी के बाद, हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रहाइशगाह पर तशरीफ़ ले गए।

अमेरिका के दौरे का बारहवां दिन - 7 अक्टूबर 2022

हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, ने सुबह 6:10 बजे "मस्जिद बैत-उल-इकराम" डलास में तशरीफ़ लाकर फ़ज्र की नमाज़ पढ़ाई। नमाज़ अदा करने के बाद, हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर वापस चले गए।

सुबह हुज़ूर-ए-अनवर विभिन्न दफ्तर के कार्यों में व्यस्त रहे।

आज जुमा का दिन था और अमेरिका के टेक्सास राज्य के शहर डलास में हुज़ूर-ए-अनवर के खुतबा-ए-जुमा के साथ जमाअत की नई केंद्रीय मस्जिद "मस्जिद बैत-उल-इकराम" का उद्घाटन हो रहा था।

नमाज़-ए-जुमा में डलास जमाअत के अलावा पूरे अमेरिका की जमाअतों से लोग लंबा और दूर का सफर तय करके पहुँचे थे। अमेरिका की विभिन्न जमाअतों जैसे ह्यूस्टन, क्वीन्स, ऑस्टिन, जॉर्जिया, फोर्ट वर्थ, मैरीलैंड, नॉर्थ वर्जीनिया, टुल्सा, बे पॉइंट, साउथ वर्जीनिया, सैन डिएगो, सैन होजे, सेंट्रल जर्सी, लेहाई वैली, रिचमंड, पोर्टलैंड, नॉर्थ जर्सी, ओश्कोश, ब्रुकलिन, बफ़ेलो, मिलवॉकी, शार्लेट, यॉर्क, शिकागो, डेट्रॉइट, बोस्टन, कंसास सिटी, लॉन्ग आइलैंड, फ़िलाडेल्फ़िया, पिट्सबर्ग, सैक्रामेंटो, अलबामा, अल्बानी, बाल्टीमोर, क्लीवलैंड, हवाई, मियामी, फीनिक्स, टक्सन, सिराक्यूज़, विलिंगबोरो और अन्य जमाअतों से लोग आए थे।

कुछ जमाअतों से लोग बहुत लंबी दूरी तय करके जुमा की नमाज़ अदा करने के लिए पहुँचे थे।

मैरीलैंड से आने वाले लोग 1367 मील, लॉस एंजिलिस से आने वाले 1433 मील और क्वीन्स जमाअत से आने वाले लोग 1578 मील का सफर तय करके आए थे।

फिर एक और दूर की जमाअत, सिएटल से आने वाले लोग 2095 मील का लंबा सफर तय करके अपने प्यारे आका की इमामत में जुमा की नमाज़ अदा करने के लिए पहुंचे थे।

नमाज़-ए-जुमा में शामिल होने वालों की तादाद 2500 से अधिक थी।

कार्यक्रम के अनुसार, एक बजे हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, ने "मस्जिद बैत-उल-इकराम" में तशरीफ़ लाकर खुतबा-ए-जुमा इरशाद फ़रमाया।

(हुज़ूर-ए-अनवर अय्यद अल्लाह ताला बिनस्रहिल अज़ीज़ के इस खुतबा-ए-जुमा के पूरे पाठ के लिए देखें अल-फ़ज़ल इंटरनेशनल, 28 अक्टूबर 2022)

हुज़ूर-ए-अनवर का यह खुतबा-ए-जुमा पहली बार डलास, टेक्सास से एम.टी.ए इंटरनेशनल के जरिए पूरी दुनिया में सीधा प्रसारित हुआ।

हुज़ूर-ए-अनवर का खुतबा जुमा

हुज़ूर-ए-अनवर का यह खुतबा जुमा दो बजे तक जारी रहा। बाद में, हुज़ूर-ए-अनवर ने जुमा की नमाज़ के साथ अस्र की नमाज़ भी पढ़ाई।

फोर्ट वर्थ की यात्रा

नमाज़ों की अदायगी के बाद, हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह पर लौट गए। आज के कार्यक्रम के अनुसार, डलास से फोर्ट वर्थ जमाअत के लिए रवाना होना था। डलास से फोर्ट वर्थ का फासला 53 मील है। शाम 6:05 बजे, हुज़ूर-ए-अनवर अपनी रिहाइशगाह से बाहर तशरीफ लाए और फोर्ट वर्थ के लिए रवाना हुए।

पुलिस की गाड़ियों ने काफिले को एस्कॉर्ट किया और रास्ता क्लियर करते रहे। करीब एक घंटे की यात्रा के बाद, शाम 7 बजे हुज़ूर-ए-अनवर का मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम, फोर्ट वर्थ में मुबारक आगमन हुआ।

EDITOR
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Editor : +91-9915379255
e-mail : badarqadian@gmail.com
www.akhbarbadr.in

REGISTERED WITH THE REGISTRAR OF THE NEWSPAPERS FOR INDIA AT NO RN PUNHIN/2016/70553
Weekly BADAR Qadian
Qadian - 143516 Distt. Gurdaspur (Pb.) INDIA
POSTAL REG. No.GDP 45/ 2023-2025 Vol. 09 Thursday 24 October 2024 Issue No. 43

MANAGER :
SHAIKH MUJAHID AHMAD
Mobile : +91-9915379255
e-mail:managerbadrqnd@gmail.com
www.alislam.org/badr

मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम में स्वागत समारोह

जैसे ही हुज़ूर-ए-अनवर अपनी गाड़ी से बाहर तशरीफ लाए, स्थानीय जमाअत के सदर श्रीमानी सईद चौधरी साहब ने हुज़ूर-ए-अनवर का स्वागत किया। जमाअत के लोग लगातार नारे बुलंद कर रहे थे। महिलाएँ अपने हाथ हिलाते हुए हुज़ूर-ए-अनवर का दीदार कर रही थीं। बच्चे और बच्चियाँ खूबसूरत लिबास में दुआएँ और स्वागत गीत पेश कर रहे थे। हुज़ूर-ए-अनवर ने अपना हाथ उठाकर सभी को अस्सलामु अलैकुम कहा। चारों ओर खुशी से हाथ उठे हुए थे, "अस्सलामु अलैकुम हुज़ूर" और "इन्नी म'आक या मसरूर" की आवाज़ें हर तरफ से गूंज रही थीं। यह जमाअत के लिए बेहद मुबारक और बरकत वाले पल थे। उनकी प्यारे आका के कदम पहली बार उनकी सरज़मीन पर पड़े थे। यह ऐसी खुशी थी जिसे वर्णन करना मुश्किल था। कई लोगों की आँखों में आँसू थे।

हुज़ूर-ए-अनवर वहाँ मौजूद लोगों के पास से गुज़रते हुए, हाथ उठाकर उनके नारों और अस्सलामु अलैकुम का उत्तर देते रहे। इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर ने मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम की बाहरी दीवार पर लगी यादगारी पट्टिका का अनावरण किया और दुआ की। फिर हुज़ूर-ए-अनवर ने मस्जिद के बाहरी परिसर में एक पौधा भी लगाया।

मस्जिद का निरीक्षण

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने इस इमारत का निरीक्षण किया। मस्जिद की लॉबी में इस इमारत के दो बड़े नक्शे लगाए गए थे। सदर जमाअत ने हुज़ूर-ए-अनवर को बताया कि इस इमारत के दोनों तरफ मीनारें बनाई जाएंगी और एक गुम्बद भी बनाया जाएगा, जो नक्शे में दिखाया गया था।

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने मस्जिद के मर्दाना हॉल और महिलाओं के हॉल का निरीक्षण किया। फिर हुज़ूर-ए-अनवर लाइब्रेरी में तशरीफ ले गए। इसके अलावा, उन्होंने जमाअती दफ्तर, मीटिंग रूम, तबलीगी रूम, मल्टी-परपस हॉल, और लजना के हॉल का भी दौरा किया।

मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम की विशेषताएँ

मस्जिद बैत-उल-क़य्यूम की यह इमारत 4.7 एकड़ के रकबे पर फैली हुई है। यह ज़मीन 2018 में 7 लाख 75 हज़ार डॉलर की कीमत में खरीदी गई थी। यहाँ पर जो इमारतें बनाई गई हैं, उनका छतवाला हिस्सा 13,000 वर्ग फ़ुट है। इस इमारत में 8 जमाअती दफ्तर हैं और एक जिम (फिटनेस रूम) भी बनाया गया है। मस्जिद के मर्दाना और महिलाओं के हॉल में 300 लोग नमाज़ पढ़ सकते हैं। अगर बाकी हॉल और लॉबी को भी शामिल किया जाए तो लगभग 1000 लोग यहाँ नमाज़ अदा कर सकते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर मस्जिद के बाहरी परिसर में पार्किंग एरिया की ओर भी गए और ज़मीन की हदबंदी के बारे में जानकारी ली।

मस्जिद की नई योजनाओं पर हस्ताक्षर और दुआ

इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर हॉल में तशरीफ ले गए, जहाँ एक मेज पर मस्जिद के दो अलग-अलग नक्शे प्रिंट किए गए थे और दो मीनारों की बुनियाद के लिए दो ईंटें रखी गई थीं। इसके अलावा, एक बास्केटबॉल भी रखा गया था, क्योंकि यहाँ खिदमतगार बास्केटबॉल खेलते हैं। स्थानीय सदर जमाअत की दरख्वास्त पर हुज़ूर-ए-अनवर ने दोनों नक्शों पर अपने दस्तखत फरमाए। साथ ही, बास्केटबॉल पर भी हस्ताक्षर किए और मीनारों की निर्माण के लिए रखी गईं ईंटों पर अपनी "अलैस अल्लाहु बिकाफ़ अब्दहू" वाली अंगूठी छू कर दुआ की।

इसके बाद, हुज़ूर-ए-अनवर थोड़ी देर के लिए दफ्तर तशरीफ ले गए।

लोकल जमाअत के साथ मुलाकात

इस दौरान, स्थानीय जमाअत के लोग हॉल में बैठ चुके थे और महिलाएँ दूसरे हॉल में जमा हो चुकी थीं। साढ़े सात बजे, हुज़ूर-ए-अनवर हॉल में तशरीफ लाए। हॉल के दरवाज़े पर एक स्थानीय अमेरिकी महिला अपने पति और बच्चों के साथ खड़ी थीं। यह महिला इस शहर की ज़ोनिंग अफसर थीं और हुज़ूर-ए-अनवर से मिलने आई थीं। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनसे कुछ देर तक बात की।

फोर्ट वर्थ के जमाअत के सदस्यों की सामूहिक मुलाकात

इसके बाद कार्यक्रम शुरू हुआ। हुज़ूर-ए-अनवर ने जमाअत के सदस्यों से पूछा: "यहाँ कितने असाइलम सीकर्स (शरणार्थी) हैं, हाथ खड़ा करें। क्या सबने काम शुरू कर दिया है?" इस पर सभी ने कहा कि उन्होंने काम शुरू कर दिया है। फिर हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "क्या आपके दिल यहाँ लग गए हैं? अगर नहीं लगे हैं, तो लगाने पड़ेंगे।"

हुज़ूर-ए-अनवर ने पूछा, "जो लोग मुझसे मिल चुके हैं, वे हाथ खड़ा करें।" जब लोगों ने अपने हाथ उठाए, तो हुज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "असाइलम सीकर्स में से अधिकतर मुझसे मिल चुके हैं।"

इसके बाद, वक़्फ़-ए-नौ के सचिव, जो शिक्षा क़ुरआन और वक़्फ़-ए-आर्ज़ी के भी सचिव हैं, ने अपना परिचय दिया। हुज़ूर-ए-अनवर ने उनसे पूछा, "आपकी स्थानीय जमाअत में कितने वक़्फ़-ए-नौ बच्चे हैं?" उन्होंने बताया कि दस बच्चे हैं, और लड़कियों के कार्यक्रम लजना द्वारा किए जाते हैं। इस पर हुज़ूर-ए-अनवर ने निर्देश देते हुए कहा, "चाहे लजना कार्यक्रम कराती हो, लेकिन रिकार्ड आपके पास सचिव के तौर पर होना चाहिए।" उन्होंने बताया कि लड़कियों की संख्या 13 है, इस तरह कुल 23 हैं।

फोर्ट वर्थ के जमाअत सदस्यों के साथ सामूहिक मुलाकात का एक दृश्य

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "आप शिक्षा-ए-क़ुरआन और वक़्फ़-ए-आर्ज़ी के भी सचिव हैं, इसलिए वक़्फ़-ए-आर्ज़ी के कार्यक्रम भी बनाएं, तबलीग करें, साहित्य दें, बाहर निकलें, लोगों से संपर्क करें और उन्हें अपने केंद्र में आने का निमंत्रण दें। हर महीने अलग-अलग जगहों से 20-15 लोग मिलेंगे, तो पूरे क्षेत्र में इस्लाम का परिचय कराया जा सकता है।" हुज़ूर-ए-अनवर ने कहा, "यहाँ जो संसाधन उपलब्ध हैं, उनका उपयोग करते हुए आपको काम करना चाहिए।"

इसके बाद हुज़ूर-ए-अनवर ने तबलीग के सचिव से पूछा कि उनका प्लान क्या है। इस पर उन्होंने कहा कि हमने साप्ताहिक कार्यक्रम शुरू किए हुए हैं। बाहरी मेहमानों को अपने सेंटर में बुलाकर उनके साथ बातचीत करते हैं।

हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया, "आपके यहाँ जो पड़ोसी हैं, उन्हें भी बुलाएं, ब्रॉशर और लीफलेट्स वितरित करने का कार्यक्रम बनाएं। अपने शहर की जनसंख्या का अध्ययन करें। यहाँ कितनी आबादी है, कौन-कौन से लोग रहते हैं - वाइट अमेरिकन, अफ्रीकन अमेरिकन, एशियन, लैटिनो अमेरिकन, और इनकी कितनी-कितनी आबादी है। पहले इसका अध्ययन करें और फिर एक-एक जातीय समूह के आधार पर अपना तब्लीगी प्लान बनाएं।"

शेष पृष्ठ 6 पर

इस्लाम और जमाअत अहमदिय्या के बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए संपर्क करें
नूरुल इस्लाम नं. (टोल फ्री सेवा) :
1800 3010 2131
(शुक्रवार को छोड़ कर सभी दिन सुबह 9:00 बजे से रात 11:00 बजे तक)
Web.www.alislam.org
www.ahmadiyyamuslimjamaat.in

CHANDIGARH DIAGNOSTIC LABORATORY
थाने वाला चौक, ठीकरीवाल रोड, नज़दीक केनरा बैंक, पंजाब एंड सिंध बैंक क़ादियान
सभी प्रकार के शारीरिक टैस्ट (खून, मल,बलग़म इत्यादि) कंप्यूटरराइज्ड तरीके से उपलब्ध हैं।
हमारे सहभागी :- SRL (SUPER RANBAXY LABORATORIES), THYROCARE MUMBAI.
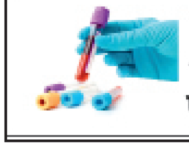
चौधरी खिज़र बाजवा दरवेश क़ादियान, लुकमान अहमद बाजवा
और जानकारी के लिए संपर्क करें :- इमरान अहमद बाजवा, रिज़वान अहमद बाजवा
फ़ोन नंबर :-+91-9646561639,+91-8557901648

Printed & Published by: Jameel Ahmed Nasir on behalf of Nigran Board of Badar. Name of Owner: Nigran Board of Badar. And printed at Fazle-Umar Printing Press. Harchowal Road, Qadian, Distt. Gurdaspur-143516, Punjab. And published at office of the Weekly Badar Mohallah - Ahmadiyya, Qadian Distt. Gsp-143516, Punjab. India. Editor:Shaikh Mujahid Ahmad